50

वर्ष 41, अंक 01, जुलाई 2005, मूल्य 05.50

ज्ञानामृत मासिक

1. मैसूर– शान्ति, सद्भावना महोत्सव का उद्घाटन करते हुए (बाएं से दाएं) कर्नाटक के पर्यटन मंत्री भ्राता डी.टी. जयकुमार, श्री बालगंगाधर नाथ स्वामी जी, सांसद भ्राता एम. शिवान्ना, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, श्री शिवरात्री देशीकेन्द्रा स्वामी जी, ब्र. कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मृत्युजय भाई तथा अन्य आध्यात्मिक नेतागण। 2. आबू रोड (शान्तिवन)– मूल्य आधारित समाज निर्माण में न्यायविदों का योगदान विषय पर आयोजित महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता सी. के. ठक्कर, गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता डी.के. त्रिवेदी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, गुजरात न्यायालय के न्यायधीश भ्राता सी. डी. मजुमदार, न्यायाधीश भ्राता डी. पी. पुच तथा न्यायाधीश भ्राता एम. आर. शाह, उड़ीसा उच्च न्यायालय के न्यायधीश भ्राता आई. एम. कुद्दुसी, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता के. के. मिश्रा, राजस्थान के यातायात तथा युवा प्रभाग के मंत्री भ्राता युनस खाँ, ब्र. कु. निर्वैर भाई, ब्र. कु. माहेश्वरी भाई तथा अन्य।

1. अहमदनगर- लोकसभा के अध्यक्ष भ्राता सोमनाथ चटर्जी को ईश्वरीय सौगात देने के बाद ब्र.कु. दीपक तथा ब्र.कु. राजेश्वरी उनके साथ । **2. मुम्बई (गामदेवी)-** 'आध्यात्मिकता द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. ऊषा बहन, ब्र.कु. रमेश भाई, रिलायन्स इण्डस्ट्रीज़ के अध्यक्ष भ्राता विनोद अम्बानी, पश्चिम रेलवे के प्रबन्धक भ्राता गिरीश पिल्लै तथा मुल्ला अशरफ बाबा। **3. हैदराबाद-** खेल विभाग के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट खिलाड़ी भ्राता वी.वी.एस. लक्ष्मण जी, न्यायाधीश भ्राता ईश्वरय्या जी, ब्र.कु. बसवराज भाई, ब्र.कु. कुलदीप बहन तथा अन्य । **4. आबू पर्वत-** वैज्ञानिक तथा अभियंता प्रभाग के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय कपड़ा मंत्री भ्राता शंकर सिंह वाघेला जी, दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. मोहन सिंघल, केन्द्रीय इलैक्ट्रोनिक्स लि. के सी.एम.डी. डॉ. भ्राता ए.जी. अग्रवाल, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. सरला बहन तथा अन्य । **5. भिलाई नगर-** व्यसन-मुक्ति चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए महापौर बहन नीता लोधी, ब्र.कु. अंजलि, ब्र.कु. तारिका तथा अन्य । **6. सूरत-** 'आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता काशीराम राणा, चैम्बर ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष प्रवीण भाई नाणावटी, ब्र.कु. रंजन बहन, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई तथा अन्य। **7. बड़ौदा-** 'आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. सरला बहन, डॉ. निरंजना बहन, धारासभ्य कांति भाई तडवी, डॉ. भ्राता विष्णु प्रसाद आचार्य, बचुभाई व्यास तथा अन्य । **8. आबू पर्वत-** यातायात तथा परिवहन प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हिल्टोन होटल के मालिक भ्राता विनोद अग्रवाल, भारत के जहाजरानी मंत्रालय के अवर सचिव भ्राता जी.आर. खेतरपाल, ब्र.कु. मीरा बहन, दादी मनोहर इन्द्रा जी, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई तथा अन्य।

दादी जी का संदेश

ज्ञानामृत के सागर परमपिता परमात्मा शिव की वरदानी वाणी का अमृत जन-जन तक पहुँचाने वाली ज्ञानामृत पत्रिका आध्यात्मिक प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध हो रही है। कहा जाता है कि सद्गुण सिखाए नहीं जा सकते, वे तो व्यवहार में उतार कर दिखाए जाते हैं। पत्रिका में प्रकाशित हृदय-स्पर्शी तथा प्रेरणादायी घटनाओं से परिपूर्ण अनुभवयुक्त लेख, पाठकों को सद्गुणों की ओर आकर्षित करके उन्हें देवत्व की ओर अग्रसर कर रहे हैं। पत्रिका को पढ़ कर दिनचर्या ठीक कर लेने वाले, व्यसन छोड़ने वाले, पारिवारिक कलह से मुक्ति पाने वाले, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने वाले तथा आत्मिक ज्ञान-गुण-शक्तियों से भरपूर होने वाले कितने ही पाठकों की एक लम्बी कड़ी है।

अपने विभिन्न लेखों और कविताओं के माध्यम से पत्रिका का यह सशक्त उद्घोष है कि धनबल, जनबल, सत्ताबल आदि से बढ़ कर है गुणों का बल। गुणों को जीवन में उतारने का आधार है ईश्वरीय ज्ञान। ईश्वरीय ज्ञान कहता है कि हम मैं और मेरा से ऊपर उठ कर 'सब कुछ ईश्वर का' इस भाव को धारण करें। निमित्त भाव से, स्वमान में रह कर सबको सम्मान देते चलें। चाहिए, चाहिए की व्यर्थ दौड़ से हट कर 'पाना था सो पा लिया, अब काम क्या बाकी रहा' यही गीत सदा गाते रहें तथा आदि देव पिताश्री ब्रह्मा बाबा के कदम पर कदम रखते हुए स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का कार्य तीव्रगति से सम्पन्न करें। संसार के दु:ख और अशान्ति की समाप्ति के लिए रहम की खान बन कर, अमृतवेले से ही मास्टर ज्ञान सूर्य की स्थिति में स्थित हो जाएँ और चराचर जगत को करुणा की, शक्ति की, पवित्रता की किरणों से सींचें। वर्ष 2005-06 के लिए ज्ञानामृत के सभी ज्ञान-हंसों प्रति मेरा यही शुभ सन्देश है कि वे गुणों की साकार प्रतिमा बन अपनी चलन और चेहरे द्वारा प्यारे बापदादा का साक्षात्कार कराएँ। कर्मों के साक्षात् प्रमाण द्वारा प्रभु के आगमन को प्रमाणित करें और गाँव-गाँव तथा गली-गली में जाकर 'ज्ञानामृत' पान की श्रेष्ठ प्रेरणा सभी को दें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

B. K. Prakash Mani

ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि

अमृत-सूची

☆☆

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	65/-	1,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	65/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	600/-	6,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	600/-	6,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–

09414423949, 09414154383

सम्पादकीय ....
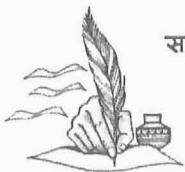
फैशन का फंदा

आज के भौतिकवादी युग ने मानव को अनेक अदृश्य फंदों में जकड़ रखा है जिनमें से फैशन भी एक है। यह फंदा देखने में बड़ा लुभावना, आकर्षक और सुखदाई प्रतीत होता है परन्तु है यह दम घोटने वाला। जो चीज़ सहज मिले, बिना हिंसा, बिना कु-स्पर्धा और बिना खर्चे के उपलब्ध हो उसे लेना बुरा नहीं है परन्तु जिसे पाने के लिए खींचतान करनी पड़े, कई जीवों को हिंसा की आग में झोंकना पड़े, कु-स्पर्धा में आकर चित्त का चैन खोना पड़े और गरीब देश का, गरीब परिवारों के बजट का बड़ा हिस्सा गंवाना पड़े तो निश्चित ही वह चीज़ त्याज्य है।

शरीर की नीलामी

फैशन से जुड़ी हर चीज़ की यही कहानी है। कहते हैं कि फैशन का एक ही उद्देश्य है – दूसरे की आँख अपने शरीर में अटकवाना, दूसरे की नज़रें अपने शरीर के पीछे लगवाना। कितनी आश्चर्य की बात है कि लोग धन को छिपा कर रखते हैं कि कहीं चोर-उचक्कों की निगाहें इस पर न पड़ जाएँ और वे छीना-झपटी न करें। परन्तु शरीर जो धन से भी ज़्यादा कीमती है, जिससे हमारा चरित्र जुड़ा है, जिसे गँवाने के बाद पाया नहीं जा सकता है, उसे हम जानबूझकर लोगों की छीना-झपटी का शिकार बनाना चाहते हैं। हम 'आ बैल मुझे मार' की कहावत को साकार करते हैं। फैशन कर-करके जिस तरह चरित्र की, पवित्रता की, सादगी की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं उससे तो यही लगता है कि वे लोग कह रहे हैं, चरित्र गया तो कुछ नहीं गया, धन गया तो सब कुछ गया। तभी तो पैसा छिपा कर रखा जाता है और शरीर, प्रदर्शन की वस्तु बना कर सरे आम नीलाम किया जाता है।

अस्वस्थ स्पर्धा का जनक है – फैशन

आज के समाज में बहुत-सी अनैतिकताओं का जनक यह फैशन ही है। यह अदृश्य फंदा है। यह समय, संकल्प, धन, चैन, ईमान, अपनत्व, दया, करुणा, सबका गला घोट देता है। आदमी को मात्र दैहिक आधार पर जीने वाला, स्वार्थी, हदों में रहने वाला पशु बना देता है। नहीं, नहीं पशु से भी बदतर। ऐसा व्यक्ति सोते-जागते, उठते-बैठते शरीर को आकर्षक बनाने की ही बातें सोचता है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कितनी भी सीमा तक पतन के गर्त में गिर सकता है। वह गुणों से नहीं, फैशन के बल पर सम्मानित होना चाहता है और यदि इच्छित मान न मिले तो अपमान की अग्नि में भी खूब जलता है। किसी अन्य को फैशन की कु-स्पर्धा में अपने से आगे निकलते देख उसकी आँखों में खून भी उतर आता है और अपने ही मार्ग के उस राही को मित्र मानने की बजाए उसका जानी-दुश्मन बन जाता है। वह उसे नीचा दिखाने और पछाड़ने की पुरज़ोर कोशिश में लग जाता है।

आत्म-ज्ञान बिना नश्वर शरीर का शृंगार, मुर्दे के शृंगार जैसा है

सुन्दरता बुरी नहीं है, परन्तु केवल शरीर की सुन्दरता पर समय, शक्ति और धन उड़ेल देना तो मुर्दे का शृंगार करने जैसा है। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं परन्तु फैशन तो एक ऐसी अनावश्यक आवश्यकता है जिसके लिए सारे संसार की सम्पत्ति भी स्वाहा कर दी जाए तो भी कम पड़ती है। कल्पना कीजिए एक ऐसे दीपक की जिसकी ज्योति उझाई (बुझी) पड़ी है परन्तु उसको रंगों से, सितारों से सजाया जा रहा है। कल्पना कीजिए एक ऐसे रथ की जिसका चालक बेहोश पड़ा है पर उस रथ को विभिन्न चित्रकारियों, मोतियों और फूलों से सजाया जा रहा है। तो क्या बिना बाती का दीपक किसी अंधेरे को रोशन करेगा ? और ज्ञान रूपी होश से रहित रथी, किसी मंजिल पर पहुँच

पाएगा ? यह शरीर भी दीपक है, रथ है, इसकी शोभा, आत्मा के कारण है। आत्मा इसकी चालक है, रथी है। आत्मा को ज्ञान, गुण, शक्तियों से, ईश्वरीय आध्यात्मिक प्रकाश से प्रकाशित किए बिना, मात्र कलेवर को सजाना क्या मूर्खता की सभी सीमाओं को लांघना नहीं है? इस शरीर की अन्तिम परिणति एक मुट्ठी राख के रूप में होने वाली है। चाहे वह एड़ी से चोटी तक बनावटी रंगों, साधनों, प्रसाधनों का बोझ ढो रहा हो या सादे परिधान में हो। पाप-पुण्य के फैसले के समय यह गिनती तो की जाएगी कि दूसरों की भलाई कितनी की, आँसू कितनों के पोंछे, हँसाया कितनों को, आशा के दीपक कितने दिलों में जलाये, पाँवों पर कितनों को खड़ा किया, दुआएं कितनों की लीं, कितनों को हृदय की शीतलता प्रदान की, अपनापन कितनों पर लुटाया, अपने मुख का निवाला भी कितनों पर न्योछावर कर दिया, अपनी इच्छाएँ समाप्त करके भी कितनों की शुभ इच्छाएँ पूर्ण कीं, परन्तु इन सबका परित्याग कर नश्वर शरीर पर बर्बाद किये गए अनमोल क्षणों को तो पाप के खाते में ही डाला जाएगा।

अन्तरात्मा की आवाज़ से बेपरवाह

आज का मनुष्य सुख के वास्तविक खज़ाने तक, जो आत्मा में छिपा है, पहुँचने के पुरुषार्थ से तो दूर भागता है परन्तु झूठे, बनावटी, अल्पकालिक सुख को, फैशन और सौन्दर्य प्रसाधनों द्वारा पाने के पतनकारी पुरुषार्थ में तुरन्त लग जाता है। इसके लिए भ्रष्टाचार करने में, झूठ बोलने में, बेईमानी और धोखा करने में, दूसरे से ठगी कर उसका धन हड़पने में, मित्र-सम्बन्धियों, माता-पिता और नजदीक रिश्तों के बीच खाई खड़ी करने में उसे ज़रा भी संकोच नहीं होता। विडम्बना देखिए, मूल्यों के साथ सादगी भरा जीवन जीने में उसे शर्म, हया और लज्जा आती है। वह सोचता है कि लोग क्या कहेंगे पर यह नहीं सोचता कि भ्रष्ट आचरण करने पर उसकी अन्तरात्मा क्या कह रही है! वह लोगों की परवाह करता है, जो दिन में दो-चार बार उसे मिलते हैं परन्तु 24 घण्टे धिक्कारने वाली अन्तरात्मा की परवाह नहीं करता।

आज का यक्ष-प्रश्न

महाभारत में, यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? युधिष्ठिर ने कहा – प्रतिदिन प्राणियों को मौत के मुँह में जाता देखकर भी मनुष्य यही सोचता है कि वह कभी नहीं मरेगा, यही सबसे बड़ा आश्चर्य है। परन्तु आज के संदर्भ में सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि प्रतिदिन इस फैशन के कारण छेड़छाड़, अपहरण, अश्लीलता, विकार, मनमुटाव, टकराव, बलात्कार की घटनाएँ बढ़ रही हैं। नर-नारी उच्छृंखल होकर पाशविक वृत्ति, दृष्टि, कृति अपना रहे हैं। समाज में अनचाहे बच्चे और गुप्त रोग महामारी की तरह फैल रहे हैं, फिर भी विवेक की आँखों पर पट्टी बाँधे लोग यही सोचते हैं कि मेरे फैशन करने से इन समस्याओं का कोई सम्बन्ध नहीं है, ये समस्याएँ अन्य लोगों की देन हैं, मेरा फैशन करना किसी भी समस्या का जनक नहीं है – यही सबसे बड़ा आश्चर्य है।

भारत के देवी-देवताओं की सतोप्रधान सजावट

यहाँ कोई यह न समझ ले कि हम साज-सज्जा, कलाकारी, सजावट, शृंगार, आभूषण और कलात्मक चीज़ों आदि के विरोधी हैं। हम तो केवल यह कहना चाहते हैं कि सात्त्विकता, नैतिकता, चरित्र, सौम्यता और मानवीय गुणों की भेंट चढ़ा कर, एक-दो को नीचा दिखाने की भावना से, अपने को जीता जागता क्रय-विक्रय करने योग्य उत्पाद बनाने की भावना से, चमड़ी और दमड़ी का दिखावा करके दूसरों को भटकाने और आकर्षित करने की भावना से, केवल शरीर केन्द्रित हो अन्य परोपकारी भावनाओं को हेय, पुरातन और व्यर्थ समझने की भावना से, देह या देह से सम्बन्धित चीज़ों को बनावटी चमक-दमक देने में जिन कीमती

श्वासों को गँवाया जाता है, वह व्यर्थ है, पतनकारी है, भाग्य की लकीर को छोटा करने वाला है। नहीं तो भारत के देवी-देवताओं को 16 शृंगार किए दिखाते हैं फिर भी कोई उनको फैशनेबल नहीं मानता। उनके गहने, कपड़े तो कितने कीमती हैं फिर भी भक्त लोग उनकी पूजा करते हैं और उनकी आरती या कीर्तिगान में भी उनके शृंगार की तथा उनके अंगों की कमल-नयन, कमल-कर्ण आदि शब्दों से महिमा करते हैं। इसका कारण यह है कि ये देवता अपने पूर्व जन्म में योगेश्वर परमात्मा से योगयुक्त हो, इन्द्रियजीत, इच्छा-मात्रम्-अविद्या और वासना रहित बने। इस विजय के अवार्ड के रूप में प्रकृति ने दासी बनकर उन्हें कंचन काया प्रदान की और साज-सज्जा के अनुपमेय साधन भी प्रदान किए। देवी-देवताओं की आन्तरिक सुन्दरता की तुलना तो असम्भव है ही, उनकी बाहरी सुन्दरता की तुलना में भी खड़ा रह सकने वाला आज तक न कोई हुआ है और न हो सकता है। चेहरे की सफेदी के लिए या लाली के लिए या आँखों की कालिमा के लिए उन्हें किसी प्राकृतिक साधन की आवश्यकता नहीं थी। स्वाभाविक रूप से अंग-अंग की सुन्दरता के साथ ये संसार में आते हैं और पूरी देवनगरी परमसुन्दर शरीरों में विराजित परमसुन्दर आत्माओं से सजी रहती है।

यह आश्चर्य नहीं तो और क्या है कि इतने सुन्दर शरीरों के मालिक होते भी वहाँ किसी को कुदृष्टि का ज्ञान तक नहीं है और यहाँ कलियुग में तो लोग काले-कलूटे, रोगी और बनावटी चीज़ों से सने शरीरों की आसक्ति में डूब जाते हैं, अपने कीमती श्वासों को गँवा कर पाप का बोझ लेकर संसार से विदा होते हैं। यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं है कि देवताओं के सर्वांग सुन्दर शरीर भी पूरे कपड़ों से ढके रहते हैं और यहाँ रोग, शोक से ग्रसित शरीरों को लोग प्रदर्शनी की तरह इस्तेमाल करते हैं।

देवताओं का हर्षितमुख, करुणामयी आँखें और पवित्रता से भरा चेहरा उनके शृंगार को चार चाँद लगा देता है। परन्तु इस संसार में क्रोध, वासनाजनित विकारों से भरे भाव, उपहास, अट्टाहास, विद्रुपता भरी हँसी तथा कपट, लोभ, निन्दा, बदले की भावना से भरे चेहरों को बनावटी शृंगार कहाँ तक ढक पाता है? अप्राकृतिक लेप-छेप से भरे ऐसे चेहरों को देखकर न तो किसी को सुख मिलता है न शान्ति। हाँ, कई बार तो वे हँसी के पात्र भी बनते देखे जाते हैं।

सादगी ही सच्ची शालीनता है

जहाँ सादगी है वहाँ संतोष, सम्मान है। सादे व्यक्ति की निगाहें अपने शरीर से हटकर दूसरों के दु:ख-सुख में साझीदार बनती हैं। वह वस्तुओं से ज़्यादा मूल्यों की कदर करता है और इसलिए नश्वर देह के स्थान पर आत्मा का मूल्यों से शृंगार करता है। वह परिवार तथा समाज की भलाई में इन मूल्यों का योगदान देता है। अपने समय, धन, शक्ति के खज़ानों को एकत्रित कर नि:स्वार्थ भाव से परहित में लुटाता है। बदले में उसे जो दुआएँ मिलती हैं, उनसे उसका शरीर और आत्मा स्वत: निखरते जाते हैं। वह सादा होते भी सात्त्विक आकर्षक से भर जाता है। उस आकर्षण में संसार के तपते हुए लोग शरण, शान्ति, सुख और चैन पाकर निहाल होते हैं। अत: सादगी ही सच्ची शालीनता है, सच्ची स्वतंत्रता है। यह मानव को सत्य और अहिंसा के एकदम निकट खींच ले जाती है। ऐसे व्यक्ति के सिर पर ईमानदारी का मुकुट, नेत्रों में अनासक्ति की चमक, मुख में अपनत्व की मधुर झंकार, हाथों में देते रहने की ललक, व्यक्तित्व में सौम्यता, व्यवहार में निश्छलता तथा कर्मों में कुशलता भरी रहती है। अत: भगवान के आह्वान पर फैशन के फंदे को निकाल फेंकिए और सादगी का शुभ विजय-हार स्वीकार कीजिए क्योंकि जीवन फंदों के लिए नहीं, आजादी के लिए है।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

★★

ईश्वरीय शक्ति का साकार अहसास

डॉ. श्याम सुन्दर महापात्र सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् और राजनीतिज्ञ हैं। आपने संसद के दोनों सदनों को अपनी निष्ठावान छवि से गौरवान्वित किया है। शिक्षाविद् के रूप में राजनीति शास्त्र और समाज शास्त्र आपके प्रिय विषय रहे हैं। आपने भारत के कोलकाता विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा जामिया मिलीया विश्वविद्यालय, दिल्ली में अपने उत्कृष्ट विचारों की छाप सब पर छोड़ी और भारत से बाहर लंडन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, अमेरिका के उड्रोविल्सन सेंटर फॉर स्कॉलर्स तथा इंटरनेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ पॉलीटीकल स्टडीज, वॉशिंग्टन में भी अपनी चिन्तन शैली के प्रवाह द्वारा लाखों विद्यार्थियों को लाभान्वित किया। आप 2 वर्ष तक ट्रेड युनियन में भी रहे और कॉन्ग्रेस के मुख्य जनरल सेक्रेटरी का पदभार भी आपने सम्भाला। मीडिया वर्ग के एक कार्यक्रम के उपलक्ष्य में आबू तीर्थ की अपनी इस तीसरी यात्रा में ''ज्ञानामृत'' को दिए साक्षात्कार में आपकी आध्यात्मिक प्रतिभा स्पष्ट उभर कर आई है। प्रस्तुत हैं साक्षात्कार के कुछ अंश। – **सम्पादक**

प्रश्न: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से आपका सम्पर्क कब हुआ?

उत्तर: पिछले चार साल से मैं इस संस्थान के नजदीक सम्बन्ध में आया हूँ परन्तु इसके नाम से परिचित काफी वर्षों से रहा हूँ। एक बार महिलाओं के सम्बन्ध में एक परिचर्चा चल रही थी। उस समय पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कहा था कि यह ब्रह्माकुमारी संस्था, मुख्य रूप से, महिलाओं के नेतृत्त्व में चलती है, यहाँ संख्या में महिलाएँ ज्यादा हैं। इनका भी समाज परिवर्तन में काफी सहयोग है। इस प्रकार, अन्य अवसरों पर भी मैंने इनको प्रधानमन्त्री जी से मिलने आते देखा पर समीपता से जान-पहचान नहीं हुई।

प्रश्न: आबू पर्वत स्थित मुख्यालय में आगमन किस उपलक्ष्य में हुआ और आपको कैसा अनुभव हुआ?

उत्तर: मैं पहली बार यहाँ एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग लेने के निमन्त्रण पर आया। मैं पिछले पचास सालों से सन्त, महात्मा, महंत, विश्वविद्यालय चलाने वाले या दिव्यता सम्पन्न आत्माओं में रुचि रखता आया हूँ और मैं साई बाबा के पास 40 साल से जाता हूँ। श्री अरविंदो आश्रम में भी जाता हूँ लेकिन यहाँ जब आया तो कार्य करने की एक नई शैली देखी। एक तो यहाँ कोई बाबा नहीं है। यहाँ कोई महंत नहीं है। यहाँ कोई एक आदमी नहीं है जिसके निर्देश में सबकुछ होता है। मुझे लगा कि अवश्य कोई ईश्वरीय शक्ति है जो यह कार्य चलाती है। **ब्रह्मा बाबा को गए लगभग 35 साल हो गए हैं। इतने कम वर्षों के अन्दर इतने बड़े-बड़े काम, ऐसा विश्व विद्यालय, ऐसा आर्कीटेक्चर, ऐसी योजनायें, ये सब कोई व्यक्ति कर नहीं सकता। तो मुझे लगा कि ईश्वरीय शक्ति इसके पीछे है। बिना ईश्वरीय शक्ति, यह काम हो नहीं सकता।** यहाँ की व्यवहार कुशलता बहुत ऊँचे स्तर की है। यहाँ कोई ब्युरोक्रेसी (नौकर शाही) नहीं है। कोई किसी को आदेश नहीं देता। जो कार्यकर्त्ता हैं वे समय अनुसार सब काम करते हैं। हज़ारों लोग आते हैं, खाते हैं, पीते हैं, चले जाते हैं, सफाई हो जाती है, यह आश्चर्य की बात है। यदि हम सरकार की तरफ से कोई काम करें तो लाखों खर्च होगा और यहाँ केवल हज़ारों में वह कार्य हो जाता है और बहुत अनुशासन के

साथ होता है। आज की सरकार कभी भी ऐसा कार्य नहीं कर सकती, न सोच सकती है। मैंने सुना है कि ओ.आर.सी. बहुत कम समय के अन्दर बन कर तैयार हुआ और उसका उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति जी ने किया। अगर सरकार को इतना कार्य करना होता तो कम-से-कम 5-7 साल लग जाते और करोड़ों खर्च होता। हज़ारों अधिकारियों की ड्यूटी, गाड़ी, घोड़ा, पेट्रोल, डीजल, तमाम खर्च गिनती करके तो कितने ही करोड़ तक खर्चा पहुँचता। अतः **इस संस्था के कार्य के पीछे कोई समर्पणमयता है। हर एक आदमी की, एक आदमी की नहीं। मैंने एक बार एक कार्यक्रम में यहाँ बोला था कि मैं यहाँ इतने नौजवान लड़कों और लड़कियों को देख रहा हूँ। ये सब घर छोड़ कर यहाँ समर्पित हुए हैं। नौकरी में जाते तो हजारों कमाते पर सब प्रकार के आकर्षण छोड़ कर सेवा में लगे हैं।** राजनीति के क्षेत्र में हमें कोई एक भी स्वैच्छिक कार्यकर्त्ता नहीं मिलता काम करने के लिए। कोई मिलता है तो दिन के आखिरी समय में 200 रुपए माँगता है। वो भी भ्रष्ट है। लेकिन यहाँ सब अपने दिल से प्रेरणा लेकर के काम करते हैं। यहाँ सब काम ठीक रीति से चलता है। मैंने देखा कि अन्य धार्मिक संस्थाओं से यह भिन्न प्रकार की संस्था है। बहुत ही भिन्न है। पहली बार आने पर जब ऐसी सुखद अनुभूति हुई तो मैं दुबारा आया और यहाँ के आयोजकों ने भी मुझे चाहा। मेरे भाषणों में इन्हें भी कुछ मिला इसलिए मुझे बुलाया। मैं अभी 76 वर्ष का हूँ। मैं बाबा की सेवा करना चाहता हूँ। मेरे द्वारा किसी भी रूप में बाबा की सेवा हो, यह मेरी हार्दिक हच्छा है। मैं एक चिंतक हूँ। राजनैतिक विश्लेषक हूँ। यदि मैं साधारण राजनैतिक होता और स्वार्थ के पीछे भागता तो मैं बहुत ऊँचा पद पा सकता था क्योंकि राजनीति में मेरी स्थिति ऐसी ऊँची थी। लेकिन मैंने राजनीति छोड़ दी, अब मैं भी बाबा का कृपापात्र बन गया हूँ।

प्रश्न: आज के समाज में भ्रष्टाचार का कारण क्या है, सादगी कहाँ तक इसे मिटा सकती है?

उत्तर: दो साल पहले मैंने ज्ञान सरोवर के हार्मोनी हॉल में प्रतिज्ञा की थी कि मैं झूठ नहीं बोलूँगा क्योंकि मुझे मन्त्री या मुख्यमन्त्री तो बनना नहीं है। जब मुझे किसी से कुछ प्राप्ति की कामना है ही नहीं तो झूठ क्यों बोलूँ? यदि कोई काम नहीं कर पाऊँगा तो कह दूँगा कि होना ही नहीं है। जो कर पाऊँगा, अवश्य ही करूँगा। मैं हृदय रोगी हूँ, मुझको ज़्यादा खाना नहीं है। **सुबह से शाम तक मैं जो खाऊँगा 100 रुपए से अधिक हो नहीं सकता। तो मेरा बजट है 100 रुपए प्रतिदिन।** उसके लिए मेरी पेन्शन काफी है। किसी से माँगने की जरूरत नहीं। यदि आदमी शाकाहारी बने और अपना खर्चा कम कर दे तो भ्रष्टाचार मिट सकता है। मुझे 20 गाड़ियाँ क्यों चाहिएँ? आने-जाने के लिए एक गाड़ी बहुत है। जिन घरों में गॅरेज नहीं है वे सब रास्ते में ही गाड़ियाँ खड़ी करते हैं। मेरे घर के सामने एक आदमी रहता है, उसके पाँच लड़के हैं, वह उनकी ससुराल से पाँच गाड़ियाँ लेकर आया है। रखने की जगह नहीं है। रास्ते में ही रखते हैं। यह एक लिप्सा है गाड़ी, घोड़ा, घर – इसको यदि हम कम कर दें तो भ्रष्टाचार कम हो जायेगा। जब तक हम लिप्सा को परख करके खत्म नहीं करेंगे, भ्रष्टाचार जायेगा नहीं।

प्रश्न: आपको बाबा से क्या विशेष अनुभूतियाँ मिली?

उत्तर: मेरे जन्मदिन की तारीख 25 जनवरी, 2003 को मैं एक मंदिर में था। जब मैं दर्शन करके गाड़ी में चढ़ने लगा तो मेरे शरीर के दाहिने हिस्से को लकवा मार गया। मुँह बंद हो गया, मेरे लड़के ने मुझे गाड़ी में बिठा कर हॉस्पिटल पहुँचाया। इसके बाद मैं दिल्ली के हॉस्पिटल में आया वहाँ एक जर्मन डॉक्टर था और 2 अमेरिकन डॉक्टर थे। उन्होंने कहा कि आपको संघर्ष करना पड़ेगा और ठीक होने में लगभग एक साल लग जायेगा। मैंने मन में सोचा कि यह तो बहुत मुश्किल है, क्या मैं एक साल

तक लगवाग्रस्त रहूँगा? बाबा के भरोसे मैंने उपचार चालू करा लिया और मात्र 15 दिनों में मेरी स्थिति सुधरने लगी। मेरे हाथ-पाँव हिलने लगे। मैं थोड़ा-थोड़ा बोलने भी लगा। एक महीने के अन्दर मैं बहुत ठीक हो गया। उसके बाद मुझे बाबा के घर से निमंत्रण मिला। मार्च महीने में कोई कार्यक्रम था। मैंने सोचा, मैं नहीं जा पाऊँगा लेकिन आश्चर्य की बात है कि मार्च तक मेरा बोलना, चलना, हिलना-डुलना सब पूर्ण ठीक हो गया। मैं माऊण्ट आबू में आयोजित कार्यक्रम में आया। मुझे देख कर किसी को भी इस घातक बीमारी के लक्षण मेरे चेहरे पर दिखाई नहीं दिए। मैंने जब भाषण में बताया तब सबको पता चला। मैं इस बीमारी के दौरान प्रतिदिन बाबा को याद करता था, **बाबा से ही प्रार्थना करता था। बाबा के बिना और कौन दया कर सकता है? मैं उस याद और प्रार्थना की बदौलत ही ठीक हुआ हूँ। यह मेरा पक्का विश्वास है।** नहीं तो डॉक्टरों ने तो मुझे एक साल के लिए हॉस्पिटल में दाखिल कर लिया था। लेकिन बाबा की मदद ने मुझे केवल एक मास में ठीक कर दिया।

अभी दो मास पहले भी मेरे दिमाग पर बहुत गहरा आघात हुआ, सिर चकराने लगा, आँखों में धुंधलापन आ गया। चिड़चिड़ापन आ गया। मैंने सोचा कि फिर कुछ उपचार करना पड़ेगा। मैं 2-3 बार हॉस्पिटल गया परन्तु मुझे ना तो डॉक्टर मिला और ना ही हॉस्पिटल का वह उपकरण ठीक था जिससे मेरे दिमाग की जाँच की जा सके। मैंने सब बाबा पर छोड़ दिया और मैं ठीक हो गया। डॉक्टर ने तो मुझे इस कार्यक्रम में आने से मना किया था और कहा था कि आपका मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं है। **लेकिन प्यारे बाबा की मदद से मैं यहाँ आ भी गया और कार्यक्रम में मैंने अपने विचार भी व्यक्त किये। सभी ने मुझे ठीक-ठाक समझा, किसी को भी मेरे चेहरे पर बीमारी के लक्षण नहीं दिख रहे हैं। यहाँ आबू पहुँचने के बाद मैंने पाया कि मैं हृदयरोग से संबंधित एक गोली भूल आया हूँ। उसके कारण मुझे रात को नींद नहीं आई।** मेरा श्वास बन्द होने लगा। मैं बाहर गया। खिड़की, दरवाजे खोले। कोई आराम नहीं हुआ। सेवाधारी ब्रह्माकुमार भाई को जगाने में भी मुझे संकोच हुआ कि इतनी रात में यह कहाँ से डॉक्टर को लायेगा। पता नहीं यहाँ डॉक्टर मिलेगा भी या नहीं। मैंने सुबह तक इन्तजार करना चाहा। लेकिन **जब बहुत तकलीफ हुई तो बाबा का फोटो, जो डायरी में था, उसको सीने से लगा लिया और मन-ही-मन कहा कि बाबा, अब मेरा ईलाज आप ही करो और इसके आधे घण्टे बाद मैं बिल्कुल ठीक हो गया।** सुबह जब दवा आई तब तक मैं बिल्कुल ठीक हो चुका था। उसी दिन मैंने पौना घण्टा भाषण किया। नहीं तो कोई भी हृदयरोगी भाषण नहीं कर सकता। तो मुझ पर ईश्वरीय कृपा है, यह मुझे महसूस हुआ। मैं मेडिकल हिस्ट्री में एक चमत्कार हूँ। मुझे 7 बार हार्ट अटैक हो चुका है। मैं बार-बार बाबा शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ। **यह मैं किसी संत, महात्मा की बात नहीं कर रहा। मैं तो निराकार परमात्मा शिव को बाबा कह रहा हूँ और उनके माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा को बाबा कह रहा हूँ।**

प्रश्न: राजयोग के अभ्यास की अनुभूतियाँ सुनाइये?

उत्तर : जब मैं योग का अभ्यास करता हूँ तो मेरी दृढ़ता बढ़ जाती है। मैं सत्ता के बल से लोगों के कल्याण का कार्य करना चाहता हूँ। भगवत्कृपा से जब व्यक्ति अपने आपको बदल लेता है तो वह सत्ता हाथ में होते हुए भी नेक कार्य कर सकता है। नहीं तो यह भी कहा गया है कि सत्ता आदमी को भ्रष्ट बना देती है। यहाँ जो राजनीतिज्ञ आते हैं, वे यदि परिवर्तित व्यक्ति बन कर जायें तो बहुत अच्छा कार्य कर सकते हैं। मैं योगाभ्यास करते-करते, बाबा की अनुभूति पाते-पाते परिवर्तित आदमी हो गया हूँ। बाबा के बारे में पढ़-पढ़ करके मेरे में परिवर्तन आ गया है।

प्रश्न : यहाँ मूल्यों द्वारा समाज पविर्तन की जो अवधारणा बाबा ने दी है, वो

आपको कैसी लगी?

उत्तर: यहाँ बाबा ने समाज परिवर्तन का एक अद्वितीय तरीका अपना लिया है। नहीं तो मंदिर में जाकर केवल संध्या, आरती करना, मृदंग बजाना – भक्ति का यह रूप समाज उपयोगी नहीं है। आप यहाँ विभिन्न अधिकारियों को बुलाते हो। डॉक्टर्स व इंजीनियर्स, मीडिया से जुड़े लोगों को बुलाते हो। समाज के हर वर्ग और हर स्तर के लोगों को बुला कर आप उनको सलाह देते हो। ये विभिन्न वर्गों के लोग ही समाज को चलाते हैं। इनको आप मूल्यबोध देते हो। ये अगर जागृत हो जायें तो समाज अच्छा बन सकता है। यही इस संस्था की खूबी है।

प्रश्न: आपके जीवन का सर्वप्रधान मूल्य कौन-सा है?

उत्तर: मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है ईमानदारी। दूसरा, कार्य को सम्पूर्णता से करो, ढीलापन न हो। लक्ष्य को पूरा करो। मैंने कई सभाओं में कहा **है कि देश निर्माण में जो करोड़ों खर्चा किया गया है उसमें से एक चौथाई भी वास्तविक पात्र लोगों तक नहीं पहुँचा है। देश निर्माण के लिए शिक्षा का विस्तार, महिलाओं में जागृति, बच्चों का उद्धार आदि कामों के लिए सरकार मिलीयन-बिलीयन खर्च कर रही है। इसी क्षेत्र में आप की संस्था भी, सरकार से कोई सहयोग लिए बिना बहुत अच्छा काम कर रही है। लेकिन यदि सरकार ब्रह्माकुमारी संस्था को काम सौंप दे तो आप एक चौथाई खर्च में उसे पूरा कर सकते हैं।** लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि कई लोग ऐसा करने से नाखुश होंगे क्योंकि उनका हिस्सा समाप्त हो जायेगा।

प्रश्न: आपकी दृष्टि में भारत का भविष्य क्या है?

उत्तर: भारत भविष्य में प्रमुख स्थान प्राप्त कर सकता है। भारत किसी भी देश से कम नहीं है। कमी है तो केवल जागृति की। जागृति के साथ ईमानदारी भी जरूरी है। मैं कई बार सोचता हूँ कि ईमानदारी और जागृति कैसे आये? प्रजातंत्र प्रणाली से तो ये आ नहीं रही हैं तो क्या तानाशाही से आयेंगी? फिर सोचता हूँ कि तानाशाही में भी आदमी मशीन बन जाता है। जो आदेश मिलता है उसी का पालन करता है। अन्त में मैं इसी निर्णय पर पहुँचता हूँ कि **यदि नैतिक पुनर्जागरण हो जाये तो ये दोनों बातें आ सकती हैं। लेकिन हर एक आदमी को कैसे मनाया जाये कि वह नैतिकता पर चले? इसका सरल तरीका है कि राजनीतिज्ञ यह महसूस करें कि विभिन्न क्षेत्रों से लोग बार-बार यहाँ आबू पर्वत स्थित मुख्यालय में आयें और मूल्यों की शिक्षा लें। वे उनको आपके इस संस्थान में भेजने का प्रबन्ध करें। इसके बाद राजनीतिज्ञ यह भी देखें कि प्रशिक्षण लेने के बाद** उनमें बदलाव आया कि नहीं आया? हम आए दिन अखबारों में पढ़ते रहते हैं कि अमुक ने एक सौ करोड़ का घोटाला किया। लेकिन वह यह तो सोचे कि इतने करोड़ लेकर वह क्या करेगा? यह एक लालच और लिप्सा है। यदि शासन का मालिक ही लालची हो जाए तो देश कैसे चलेगा? **मूल्यों और सादगी की बात तो आपके मुख से ज्यादा शोभा देती है क्योंकि आप जो कहते हैं, वह करते हैं। इसलिए मूल्यों की शिक्षा आप के पास आकर उनको लेनी चाहिए। आज हमारे देश को कर्मठ, ईमानदार और प्रतिभावान लोगों की आवश्यकता है।**

प्रश्न: आपकी भविष्य योजना क्या है?

उत्तर: मैंने राजनीति में जाने का विचार छोड़ दिया है। मेरे जीवन के जो वर्ष बचे हैं उनमें मैं बाबा का प्रचार करना चाहता हूँ। मैं बड़ी-बड़ी सभाओं में अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ जहाँ बौद्धिक लोग ज़्यादा हों और मेरा विषय रहेगा राजनीति में मूल्यों का पतन। मैंने एक सौ सभाओं के निमन्त्रण स्वीकार कर लिए हैं। हर सभा में मैं बाबा का सन्देश देता हूँ। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद इस थोड़े से समय में आपने बहुत अच्छा काम किया है। उन्होंने जो कुछ बोला था वह भी आपने किया और जो संकल्पों में था वह भी आपने किया है। ◻◻

'पत्र' सम्पादक के नाम

प्रश्न - अतीन्द्रिय सुख का गायन किस समय का है और क्यों?

– ब्रह्माकुमार मनोहर, जबलपुर

उत्तर - अतीन्द्रिय शब्द अति+ इन्द्रिय से मिल कर बना है। अति का अर्थ है परे और इन्द्रिय का अर्थ है इन्द्रियों से सम्बन्धित। जो सुख, जो प्राप्ति, जो अनुभूति इन्द्रियों से सम्बन्धित सभी विषयों को लांघ कर, उनसे परे जाकर प्राप्त होती है उसे अतीन्द्रिय सुख या अतीन्द्रिय अनुभूति कहते हैं। शास्त्रों में गायन है कि अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। प्रश्न उठता है कि ये गोप-गोपियाँ कौन हैं जिन्होंने इन्द्रियों पर नियन्त्रण कर लिया और प्राणवल्लभ भगवान से मन की तार जोड़ कर नित्य, इन्द्रियातीत, अगोचर, अलौकिक सुख को पाया। इन्द्रियों के आकर्षण से पार जाने के लिए व्यक्ति को विदेह बनना पड़ता है। तब उसे यह अनुभूति हो जाती है कि यह देह रूपी रथ मुझ अविनाशी, ज्योतिस्वरूप आत्मा का सच्चा साथी नहीं है। यह मेरा साधन मात्र है जिस पर सवार होकर मैं संसार लीला का साक्षी भाव से अवलोकन कर रही हूँ पर मैं इसे किसी भी क्षण छोड़ कर जा सकती हूँ। हर समय मुझे सवारी प्रदान करने वाला शरीर ही मेरा नहीं है तो इससे जुड़े पदार्थ, वस्तु, व्यक्ति, वैभव तो कदापि मेरे नहीं हैं और जो मेरे नहीं हैं, मेरे साथ नहीं रहेंगे, मेरा साथ छोड़ देंगे उन नश्वर पदार्थों को देख कर, संग्रह करके, उनको शरीर पर लगा कर, खाकर, उपभोग करके मैं अल्पकालिक सुख के भ्रम में क्यों फँसूँ? देह में रहते हुए आत्मा का उपरोक्त चिन्तन चलता रहे, ऐसा ज्ञान स्वयं निराकार परमात्मा शिव वर्तमान समय चल रहे संगमयुग पर साधारण मानवीय तन का आधार लेकर प्रदान कर रहे हैं। ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के आधार पर कोई भी आत्मा देह से न्यारी होकर अतीन्द्रिय आनन्द का रसपान कर सकती है। जो यह रसपान करेगी उसी को ही 'गोप' या 'गोपी' विशेषण मिल जाएगा। भगवान के आने से पहले कोई भी आत्मा सच्चे अर्थों में विदेह होकर, विदेही परमात्मा से लगनशील होती ही नहीं है। इसलिए अतीन्द्रिय सुख का गायन गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों के नाम से ही है। वल्लभ माना अतिप्रिय अर्थात् परमात्मा और गोपी माना इन्द्रियों को पी जाने वाली और गुप्त रूप में परमात्मा से मन-बुद्धि के तार जोड़ने वाली आत्मा। वर्तमान संगमयुग पर ही कल्प में एक बार गोपी वल्लभ अवतरित होते हैं, अभी ही आत्माएँ गोपी भाव धारण करती हैं और अभी ही अतीन्द्रिय सुख में रमण कर वे पुरानी दुनिया के पाप-ताप से सुरक्षित हो, नई दुनिया निर्माण में भगवान की सहयोगी बनती हैं इसलिए यह गायन इस समय का अर्थात् संगमयुग का है।

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

मई, 2005 की ज्ञानामृत में लेख पढ़ा 'कर्म सिद्धांत'। काफी सुख महसूस हुआ यह पढ़कर कि प्रत्येक व्यक्ति को कर्म का फल मिलना ही है, आज नहीं तो कल। कुछ दिन पहले किसी से बातचीत हो रही थी कर्मों के बारे में, तब वे बोले कि क्या हैं कर्म, अच्छे कर्मों की तो यहाँ जगह ही नहीं है, हम अच्छा करते हैं तो भी फल अच्छा नहीं मिलता। परन्तु पत्रिका पढ़ी तो बहुत अच्छा लगा कि हमारे वरिष्ठ भाई जी वहाँ बैठकर कितनी अच्छी सेवा कर रहे हैं। हमारी शुभकामना है कि आपकी ज्ञानामृत दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करे तथा इतनी अच्छी सेवा जो आप कर रहे हैं, बाबा उसका रिटर्न तो देंगे ही।

– गौरव, जीन्द

अन्तिम सेवा फ़रिश्ता स्थिति द्वारा

– ब्रह्माकुमारी हंसा रावल, टेक्सास (अमेरिका)

इंडोनेशिया में जब भूकम्प (सुनामी) आया तो सारी पृथ्वी हिल गई। न्यूयॉर्क में ऐसा यन्त्र है जिससे पृथ्वी की परिक्रमा को पकड़ा जा सकता है। इस भूकम्प के पहले पृथ्वी कुछ परिवर्तित-सी हो गई थी जिसे उस यन्त्र ने पकड़ लिया था और तुरन्त इण्डोनेशिया संदेश भेजा गया था कि कुछ घटने वाला है क्योंकि पानी में भूकम्प होता है तो हमेशा सुनामी होती है। मगर इण्डोनेशिया की सरकार ने कुछ किया नहीं। इससे 15 वर्ष पहले एक सुनामी और हुई थी एलास्का, अमेरिका में। उसमें भी कई लोग मारे गए थे क्योंकि पता नहीं था। लेकिन अभी तो पता पड़ जाता है और कहते हैं कि 15-20 सेकण्ड में सभी को बचाया जा सकता है। यह कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि हमें सिर्फ समुद्र से दूर ही हटना है। यह घटना इतनी गम्भीर हुई कि 12 देशों पर इसका असर हुआ। इन देशों में, अन्य देशों के भी कई लोग थे। इण्डोनेशिया बहुत ही सुन्दर देश है क्योंकि छोटे-छोटे टापू हैं। कई टापुओं में तो बहुत भ्रष्टाचार है। वहाँ पाँच सितारा होटल हैं जहाँ बहुत ही गन्दी बातें होती हैं। अमीर लोग वहाँ जाते हैं क्रिसमस मनाने, पैसा उड़ाने तथा दैहिक मज़ा करने के लिए। वहाँ से बहुत छोटी-छोटी 2000-3000 लड़कियों को लेते हैं और बहुत गन्दा काम होता है। ये सभी बातें खुले रूप से होती हैं। सुनामी के समय वहाँ अमेरिका, यूरोप, इंग्लैण्ड के बहुत से लोग थे। वहाँ का सारा कारोबार इन्हीं के पैसों से चलता है।

भगवान की गुप्त मदद के अनुभव

सुनामी के बाद हमने भगवान के बारे में बहुत-सी बातें सुनी। एक 6 साल का लड़का था। जब सुनामी की बड़ी लहर आई तो उसकी माँ और सम्बन्धी, लहरों द्वारा खींच लिए गए। उसने अपनी माँ को बोला कि मुझे सफेद लाइट देखने में आती है और मुझे डर नहीं लग रहा है। पहले वह बहुत डर गया था। माँ ने सोचा कि वह अब मर जायेगा क्योंकि माना जाता है कि सफेद लाइट का अनुभव तब होता है जब कोई मरने वाला होता है। परन्तु वह लड़का बच गया। सफेद लाइट देखने के बाद वह घबराया नहीं, उसके मन में शान्ति आ गई। एक माता के 6 और 2 वर्ष के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे लहरों में फँसे थे। उसने अपना अनुभव सुनाया कि मैंने भगवान को बोला कि मैं दोनों को बचा नहीं सकूँगी। उसने छोटे को पकड़ा और बड़े को छोड़ दिया। माँ और छोटा बच्चा बच गए। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि छोड़ा हुआ बच्चा भी वापिस आ गया है। माँ को आश्चर्य हुआ कि मैंने तो भगवान को सिर्फ दो सेकण्ड में बोला कि मैं जितना कर सकती हूँ उतना कर रही हूँ। मैं मजबूर हूँ। तो भगवान ने दूसरे को भी बचा लिया। इस घटना के समय उसने भगवान के अलावा किसी अन्य को याद नहीं किया और बच गए।

प्राकृतिक विपत्ति देख आई ईमानदारी

जहाँ भूकम्प हुआ उसके नजदीक दो दिन पहले ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाई-बहनों का बड़ा कार्यक्रम था। वहाँ ब्रह्माकुमार भाई-बहनें बहुत थे। कार्यक्रम के एक दिन बाद और भूकम्प के एक दिन पहले सभी वहाँ से प्रस्थान कर गए परन्तु एक भाई वहीं रुक गया। उसने बहुत सारा साहित्य खरीदा था परन्तु पैसे नहीं दिए थे। लहरें आई और उसे पानी में

ले गईं। पानी में उसे संकल्प आया कि मैंने पैसे नहीं दिए थे इसलिए यह सब हुआ। इतना सोचते ही लहरों ने उसे बाहर फेंक दिया। जो किताब वह पढ़ रहा था वह अभी तक भी उसके पास थी, बाकी किताबें बह गईं थी। मानो शिव बाबा की किताब के कारण वह बच गया। उसने सेवाकेन्द्र पर फोन किया कि मुझे माफ कीजिए, मैंने पैसे नहीं दिए थे और किताबें उठा ली थीं। मेरे पास जितना भी पैसा है, मैं वह सारा आपको भेज रहा हूँ। आपकी किताब के कारण ही मैं फिर से जीवित हूँ।

ईश्वरीय टचिंग ने बचाया जीवन

एक ब्रह्माकुमार भाई जिसका नाम इब्राहिम है वह भी वहाँ रुक गया था। इब्राहिम भाई, जानकी दादी के साथ लंदन में ही रहता है और स्व-प्रबन्धन कार्यक्रम इसी ने शुरू किया है। उसे स्कूबा डाइविंग जाना था एक दोस्त के साथ। स्कूबा डाइविंग में समुद्र की गहरी वनस्पतियों की जानकारी लेने के लिए जाया जाता है। परन्तु निर्धारित समय से पहले उसने परमात्मा की प्रेरणा के अनुसार यह कार्यक्रम निरस्त कर दिया। मित्रों ने चलने के लिए काफी दबाव डाला परन्तु वह नहीं गया। वह वहाँ से थाईलैण्ड चला गया और वहाँ जाकर उसे मालूम हुआ कि इण्डोनेशिया में सुनामी लहरों का प्रकोप हुआ है। इसमें उसके सभी मित्र खत्म हो गए। वह बच गया और ऐसे बहुत से लोग थे जिनके पैसे, परिवार, साथी, सम्बन्धी, बंगले आदि कुछ भी काम में नहीं आए।

आए अकेले, जाना अकेले

जो लोग समुद्र के किनारे से दूर थे उन्होंने जब सुना कि समुद्र में बहुत ऊँची-ऊँची लहरें आ रही हैं तो वे देखने के लिए समुद्र के किनारे चले गए। वे भी लहरों के जाल में फँस गए। यह भी कर्मों की गुह्य गति है। हमें यह नहीं मालूम होता है कि यमराज कब, कहाँ और कैसे आयेगा? कैसे हम काल के गाल में चले जायेंगे? कइयों के तो परिवार के परिवार नष्ट हो गए, कई परिवारों में सिर्फ बच्चे बच गए और शेष सभी खत्म हो गए, किसी में माता-पिता बच गए और बच्चे समाप्त हो गए। हम जानते हैं कि जब हम आये थे तो अकेले आए थे और जायेंगे तब कितनी भी हमारी सुरक्षा हो, अंगरक्षक साथ में चलते हों, स्नेह देने वाले बहुत-से लोग हों, हमें किसी से कितना भी मोह हो पर कोई भी काम नहीं आयेगा। हम कर्म और संस्कार साथ लाए थे और इन्हें ही साथ लेकर जायेंगे। जब हमारा समय आता है तो हमें अकेले जाना पड़ता है। कहते हैं कि नंगे आए थे, नंगे जाना है अर्थात् कुछ भी साथ नहीं जायेगा। समुद्री लहरों ने इन्सानों के कपड़े तक भी खींच लिए। शिव बाबा ने कहा है कि एक समय ऐसा आयेगा जब पाँचों तत्व साथ मिल कर सारी दुनिया को तहस-नहस कर देंगे। अभी तो सिर्फ 12 देशों में विनाश हुआ परन्तु जब सारी दुनिया में तबाही होगी तो कौन किसकी मदद करेगा? अभी जितने भी लोग मृत्यु को प्राप्त हुए हैं उन्हें ज्ञान तो मिला ही नहीं, आगे तो करोड़ों लोग शरीर छोड़ेंगे अत: हमें बाबा का सन्देश सभी तक जल्दी-से-जल्दी पहुँचाना है।

बढ़ रही है सूर्य की ज्वाला

इस घटना के बाद सभी वैज्ञानिक सोचने लगे कि प्रकृति का हमला किस-किस तरह से हो सकता है और उससे लोगों को कैसे बचाया जा सकता है? वैज्ञानिक शोध के अनुसार सूर्य एक आग का गोला है और उसकी ज्वाला अभी बढ़ रही है। कहा जा रहा है कि अगर इसकी ज्वाला एक मील बढ़ गई तो पृथ्वी पर बहुत-बहुत नुकसान होगा। सभी जगह अकाल पड़ जायेगा, वनस्पति जल जायेगी और बहुत सारी तकलीफें सामने आ जायेंगी। सिर्फ एक सूर्य इतना कुछ कर सकता है सूर्य की ज्वाला बहुत बढ़ रही है। कहा जाता है कि जब सूर्य की ज्वाला

बढ़ेगी तो धरती के अन्दर की ज्वाला भी बढ़ जायेगी जिससे सभी जगह ज्वालामुखी फटेंगे और सभी को जला देंगे। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि वह समय बहुत नजदीक आ रहा है।

तंग हो गई है पृथ्वी

दूसरी बात, तारामण्डल में जो सितारे हैं वे हैं तो पत्थर ही। दो मील, तीन मील, पाँच मील तक फैले हुए पत्थर। पृथ्वी में 75% से ज्यादा पानी है, 22% ही जमीन है। जब पानी से भरे घड़े में पत्थर मारते हैं तो क्या होता है। वैसे ही समुद्र का पानी जब उछाल खायेगा तो देश-के-देश पानी में चले जायेंगे और हम सुनेंगे कि कल तक यह देश था, अब नहीं है। सूर्य के चारों ओर पृथ्वी 70 मील प्रति घण्टे की रफ्तार से घूमती है। जब दो कारें इतनी रफ्तार पर टकरायें तो क्या होता है? बहुत बुरी दुर्घटना होती है। पृथ्वी चुम्बक की तरह व्यवहार करती है। एक बार पृथ्वी ने इन पत्थरों को अपनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति से खींच लिया तो ये रॉकेट की रफ्तार से पृथ्वी की तरफ आयेंगे। पिछले वर्ष तारामण्डल का एक पत्थर अमेरिका में गिरा परन्तु ऐसी जगह पर गिरा जहाँ आबादी नहीं थी इसलिए कोई नुकसान नहीं हुआ। तारामण्डल में ऐसे करोड़ों पत्थर घूम रहे हैं। कभी-कभी हम देखते हैं ना कि तारा गिरा, वह क्या है? वह पत्थर ही है। वैज्ञानिक इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह होना ही है परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम है कि यह कब होगा। मगर यह कहा जाता है कि ये घटनाएँ 100% होने वाली हैं। चौबीस घण्टे वे बड़ी-बड़ी मशीनों से तारामण्डल को देखते रहते हैं कि तारामण्डल का कोई पत्थर पृथ्वी की तरफ आ तो नहीं रहा है? मशीनरी हमें यह बता सकती है कि यह होने वाला है परन्तु इलाज तो नहीं बता सकती ना। बाबा के सन्देश में भी यही आया था कि अभी पृथ्वी भी तंग हो गई है। पृथ्वी पाँच तत्वों से बनी हुई है, इन पाँच तत्वों में तारामण्डल का भी योगदान है।

मन की शक्ति ही सिद्ध करेगी कार्य

अभी सभी जगह उपग्रहों के माध्यम से इन्टरनेट, सुरक्षा और टेलीविजन के क्षेत्र में कई कार्य किए जा रहे हैं। एक पत्थर ही इन उपग्रहों के लिए काफी है। बाबा कहते हैं कि एक दिन ऐसा आयेगा जब मन की शक्ति काम करेगी। वह समय बहुत नजदीक है जब टेलीफोन, टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि सब चीज़ें नहीं होंगी, डाक सेवा तो होगी ही नहीं क्योंकि जब सभी जगह गड़बड़ चल रही होगी तो डाक-घर कौन जायेगा? अमेरिका में बैंक में पास-बुक काम में नहीं आती, कम्प्यूटर बताता है कि आपके खाते में कितने पैसे हैं। जब उपग्रह ही नष्ट हो जायेंगे तो कैसे पता चलेगा कि किसके खाते में कितने पैसे जमा हैं। इसलिए कहा जाता है कि 'किसकी दबी रही धूल में, ...'। सुनामी में सभी के पैसे, जायदाद सबकुछ पानी ले गया। इसलिए हमें अपनी कर्मातीत स्थिति बनानी है। देह, देह के सम्बन्ध, वस्तु, वैभव, पदार्थ सब तरफ से ममत्व निकाल देना है।

भगवान है सबसे नजदीक

हम दूर से भी किसी को बहुत मदद कर सकते हैं। सिंगापुर में एक भाई को आभास हुआ कि कुछ होने वाला है। उसने अपने परिजनों को जल्दी-जल्दी एक टापू में फोन लगाया कि कहीं चले जाओ, कुछ भयानक होने वाला है। वहाँ आकस्मिक घण्टी थी जिसे असुरक्षा के समय बजाया जाता है। जैसे ही वो घण्टी बजी, लोग सबकुछ छोड़ कर अपने बच्चों को लेकर भागने लगे। उस जगह एक आदमी भी नहीं मरा। एक छोटे-से फोन की मदद से इतने सारे लोग बच गए। पन्द्रह सेकण्ड में सभी लोग बच गए। भगवान हमारे सबसे अधिक नजदीक है। एक संकल्प से वह हमारे

शेष पृष्ठ.....18 पर

माँसाहार – क्रूरता का व्यवहार

– *ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन*

भारतीय संस्कृति में भोजन करना यज्ञ करने के समान माना गया है इसलिए चरक संहिता में कहा गया है - **"मनुष्यों के लिए उचित है कि मात्रा और काल का विचार करते हुए सावधानीपूर्वक प्रतिदिन हितकारी अन्नपान रूपी समिधा (लकड़ी) से अन्तराग्नि (जठराग्नि) में होम (हवन) करें।"**

प्राचीनकाल में लोग ऐसा नियम भी बना कर रखते थे कि जब तक किसी अन्य को भोजन न करा लेंगे खुद भी नहीं खायेंगे। आजकल भी कई लोग भोजन का कुछ हिस्सा निकाल कर गाय या अन्य किसी प्राणी के लिए अवश्य रखते हैं या दूर-दूर तक ढूँढ कर भी भोजन का पहला हिस्सा इन मूक प्राणियों को अवश्य खिलाते हैं। इन सब प्रथाओं के पीछे मानव की सर्व के प्रति मंगल भावनाएँ, 'जिओ और जीने दो' की भावनाएँ ही परिलक्षित होती हैं। **चींटियों के बिलों में आटा डालना, पंछियों के झुण्ड को दाना डालना, उनके लिए बड़े पात्र में जल भर कर रखना, ये भी हमारे दयालु पूर्वजों द्वारा चलाई गई प्रथाएँ हैं जो आज भी परोपकार की प्रेरणा देती हैं।**

मूक प्राणियों की हत्या तो दूर इनको सताना भी महापाप है इसलिए तो भारत में और विदेशों में भी ऐसे कानून हैं कि यदि कोई अपने पालतू पशु-प्राणी को भी शारीरिक यातना देता हो, पूरा भोजन न देता हो, उससे अधिक कार्य लेता हो, अधिक भार लादता हो तो उसका चालान हो जाता है। कुछ साल पहले मेनका गाँधी ने घोड़ों को चमड़े के चाबुक से हाँके जाने के विरुद्ध कानून बनाने की आवाज़ उठाई और उसमें सफलता पाई। तो विचार कीजिए कि किसी भी जानवर को जान से मार दिया जाना कितना भयंकर पाप है? यह तो पैशाचिक वृत्ति की पराकाष्ठा ही कही जाएगी।

निजी मामलों में दखलन्दाजी क्यों

कई लोग कहते हैं कि भोजन क्या खाया जाए और क्या न खाया जाए, यह उनका निजी मामला है, इसमें कोई दखलन्दाजी क्यों करें। हम जीवन के पदार्थों का स्वतन्त्रतापूर्वक आनन्द लेना चाहते हैं, इसी के लिए तो हम कमाते हैं और जी तोड़ मेहनत करते हैं। यह सही है कि हर व्यक्ति अपने खाने-पीने-पहनने के मामले में स्वतन्त्र है परन्तु यह स्वतन्त्रता वहीं तक मान्य है जहाँ तक दूसरों की स्वतन्त्रता का हनन न हो। एक बार एक व्यक्ति सड़क पर छड़ी घुमाता हुआ आ रहा था। दूसरे राहगीर ने उसे ऐसा करने से रोका तो उसने उत्तर दिया कि सड़क पर चलना और छड़ी घुमाना स्वतन्त्रता प्रदत्त मेरा अधिकार है। राहगीर ने कहा - **"आप स्वतन्त्र हैं परन्तु यह स्वतन्त्रता वहाँ समाप्त हो जाती है जहाँ दूसरे व्यक्ति की नाक शुरू होती है।" इसी प्रकार, हम कुछ भी खाने के लिए स्वतन्त्र हैं परन्तु यह स्वतन्त्रता वहाँ समाप्त हो जाती है जहाँ दूसरे प्राणियों के जीवन के अस्तित्व के लिए खतरा बन जाती है। अन्य किसी को सताए बिना, कष्ट पहुँचाए बिना, उसकी आह निकलवाए बिना हम कुछ भी खाने के लिए स्वतन्त्र हैं।**

मना क्यों किया जाता है?

कई लोग पूछते हैं कि माँस खाने से मना क्यों किया जाता है। माँस से होने वाले नुकसान के शारीरिक, सामाजिक पहलू तो हैं ही, साथ-साथ मानव की मानवता बनी रहे इस नाते इसके कुछ नैतिक पहलू भी हैं। मानव को सभी जीवधारियों में सर्वोच्च माना गया है। इस नाते उसके कुछ कर्त्तव्य और जिम्मेदारियाँ भी हैं। मानव होने के नाते उससे करुणा, दया, सहानुभूति और परोपकार की आशा की जाती है। एक नागरिक में और जंगली

दरिन्दे में इन्हीं भावनाओं के आधार पर अन्तर है। यदि मानव के अन्दर से ये समाप्त हो जाएँ तो वह मानव के दर्जे से गिर जाता है। मानव रूप में भेड़िया बन जाता है। पशुत्व और मनुष्यत्व के बीच की रेखा मिट जाती है। मानव रूप में वह राक्षस बन जाता है। माँस खाने का अर्थ है अपने पेट के लिए दूसरे का जीने का अधिकार छीनना, उसकी हत्या कर देना। कोई भी चीज जो खाई जाती है, जीभ पर तो 5-7 सेकेण्ड ही टिकती है। इसके बाद पेट में जाकर तो न उसके मीठे होने का पता रहता है, न खट्टे होने का, न स्वादु होने का पता रहता है न बेस्वाद होने का। मात्र 5-7 सेकेण्ड के रस के लिए वह माँसभक्षी किसी जीवित को मृत्यु के अंधकार में धकेल देता है। उसका अमूल्य जीवन जो उसे उपहार रूप में मिला था, उससे सदा के लिए उसे वंचित कर देता है। यह एक ऐसी हानि है जिसका बदला वह व्यक्ति कभी नहीं चुका सकता। क्योंकि उसने जीवन ले तो लिया पर देने का सामर्थ्य उसमें नहीं है। जो मानव ऐसा नीच कृत्य कर सकता है, उसके सामने नैतिकता, शुद्ध आचार, व्यवहार का कोई मूल्य नहीं रह जाता। केवल एक बार की भूख मिटाने के लिए यदि वह किसी की गर्दन पर छुरी चलवा सकता है, उसके पेट को चिरवा सकता है तो उससे किस अच्छाई की आशा की जा सकती है।

आज हम देखते हैं कि अनेक घरों में मिट्टी, प्लास्टिक या धातु आदि के बने गाय, कुत्ता, घोड़ा, मुर्गा, तोता आदि पशु-पक्षी ड्राइंग रूम में सजे होते हैं। दीवारों पर पेंटिंग आदि में भी इनके चित्र बनाए जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रकृति की तरफ से संसार की शोभा बढ़ाने और मानव का मनोरंजन करने, दिल बहलाने के लिए ये पशु प्राणी उपहार हैं। मूक होने के नाते उसके आश्रित भी हैं। अत: आश्रित की हत्या करना, प्रकृति प्रदत्त उपहार को नष्ट करना यह तो कड़े-से-कड़ा अपराध है। ये मूक प्राणी भी जब देखते हैं कि इनको वध के लिए ले जाया जा रहा है तो समझ जाते हैं और छूट कर माँ प्रकृति की गोद में जाना चाहते हैं। अपनी गोल-गोल आँखों से याचना टपकाते हैं और मानव से दया की भीख माँगते हैं परन्तु अमानुषी वृत्ति से लबालब भरा मानव का हृदय उनकी याचना पर तनिक भी ध्यान न देकर उनका काम-तमाम करवा देता है। इसी कारण मानव समाज में भी हर मानव स्वार्थी बन गया है। वह उल्लू सीधा करने के लिए दूसरे व्यक्ति को निरापद नहीं छोड़ता है। येन-केन प्रकारेण दमड़ी से जेबें भरने में लगा है। इसी अन्याय और क्रूरता ने मानव समाज को मंगल राज के बजाए जंगल राज में बदल दिया है। ★★★

विकारों को कैसे जीता जाये

पवित्र बनने के लिए, अपवित्रता के मूल कारण 'अज्ञान' की निवृत्ति आवश्यक है। अब, जैसे यदि एक कमरे में अंधकार हो तो उससे छुटकारा पाने के लिए कमरे में अंधकार को लाठी मारने से अथवा झाड़ू मार बाहर निकाल फेंकने का प्रयत्न करने से अंधकार दूर नहीं होता बल्कि, सभी जानते हैं कि अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश का दीपक चाहिए। इसी प्रकार, अज्ञान की निवृत्ति हठ, तप आदि ऊपरी साधनों से नहीं होती बल्कि ज्ञान-ज्योति जगाने से होती है। परन्तु जैसे एक बुझा हुआ दीपक, बुझे हुए दीपक द्वारा नहीं जल सकता वैसे ही जिसकी अपनी आत्म-ज्योति नहीं जगी अर्थात् जो स्वयं पवित्र और शान्त नहीं, वह दूसरों की ज्योति कैसे जगा सकेगा ? इसलिए आवश्यकता है कि मनुष्यात्मा परमपिता परमात्मा से योगयुक्त हो क्योंकि वही एक 'सदा जागती ज्योति' है अर्थात् वही ऐसी ज्योति है जो सब ज्योतियों (आत्माओं) के बुझ जाने पर उनको फिर से जगाने के निमित्त है।

मोह का यथार्थ स्वरूप

– ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

चित्त की वह विकलता, जो किसी प्रिय के प्रति मीठी याद, कसक, भावुकता या अनुचित दु:ख, डर, चिन्ता के रूप में उत्पन्न होती है, मोह कही जाती है। आत्मा को सबसे ज्यादा प्रिय खुद की देह होती है क्योंकि इस शरीर की इन्द्रियों के द्वारा ही आत्मा विभिन्न प्रकार के लौकिक रसों का अनुभव करती है। दूसरे नम्बर पर मोह होता है सन्तान के प्रति। परन्तु अपने शरीर से मोह भगवान से बिछोह कराता है और मोह के आवरण में पली सन्तान भविष्य में सन्ताप देती है। मोह विकार दूरदर्शिता (त्रिकालदर्शीपना), निमित्त-भाव, निर्दोष दृष्टिकोण, निश्चिंतता और विवेकशीलता जैसे दिव्य गुणों का हरण करके वहम, अपनापन, बुद्धि की संकीर्णता, सन्तान से दैहिक लगाव और मानसिक दुर्बलता लाता है। गीता प्रसिद्ध अर्जुन में जब मोह पैदा हुआ तो उसने अधर्म के नाश का संकल्प त्याग दिया और धृतराष्ट्र मोहग्रस्त होकर पुत्र के धर्मभ्रष्ट कर्मों पर भी चुप्पी साधे रहा। इस प्रकार, मोह अकर्त्तव्यों की ओर प्रेरित करने वाला गुप्त शत्रु है।

आज भी माँ-बाप, बच्चे के मोह में उसकी गलत आदतों को नजरअन्दाज करते रहते हैं जो फिर संस्कार के रूप में ढल जाती हैं। वही बच्चा फिर बड़ा होकर माँ-बाप को ही दु:ख नहीं देता बल्कि स्वयं के दु:ख का भी कारण बन जाता है। उसके गलत संस्कारों का प्रभाव समाज पर भी पड़ता है। ऐसा व्यक्ति फिर जब स्वयं बाप बनता है तो अपने दूषित संस्कारों की छाया में बच्चे की पालना करता है। यह क्रम पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता है और हर बाद वाली पीढ़ी पहले से ज्यादा गिरावट में आती जाती है, जैसे कि उतरती सीढ़ी का हर पायदान पहले वाले पायदान से ज्यादा गिरावट (गहराई) में होता है।

मोह और आलस्य हैं गुप्त विकार

आज मनुष्यों के पास भौतिक सम्पदाओं और साधनों का अम्बार लगा पड़ा है परन्तु फिर भी वे सुख-शान्ति के मोहताज हैं। इसका एक कारण उनका मोह-ताजधारी होना भी है। इस ताज को तजने के लिए वे तब तैयार हों, जब महसूस करें कि यह फूलों का नहीं बल्कि काँटों का ताज है। कहते भी हैं – **'मोह-माया'** को छोड़ो क्योंकि माया, मोह को आगे कर, अपना रास्ता बनाती है। मोह और आलस्य मीठे व गुप्त विकार हैं और काम, क्रोध, लोभ व अहंकार की भाँति डरावना और प्रत्यक्ष प्रदर्शन नहीं करते। किसी भी बड़े युद्ध से पहले शत्रु-देश में गुप्तचर भेजे जाते हैं जो मीठे-भोले रूप में गुप्त तरीके से सूचनायें इकट्ठी करके अपने कमाण्डर को भेजते हैं। "माया-कमाण्डर" भी मोह व आलस्य रूपी गुप्तचरों से कार्य करा कर फिर काम, क्रोध, लोभ व अहंकार रूपी योद्धाओं को लड़ने के लिए भेजती है। जिस प्रकार, दीमक चुपचाप अन्दर-ही-अन्दर लकड़ी के कीमती फर्नीचर को खोखला कर देती है, उसी प्रकार, मोह विकार भी मनुष्य को गुणों से खोखला कर देता है। मोह का उल्टा है 'उपेक्षा' जो कि मोह के समान ही घातक है परन्तु स्वाद में मीठा नहीं बल्कि कड़ुवा है। कुछ मनुष्य धनार्जन के नशे में अपनी औलाद की मानसिक व आत्मिक जरूरतों पर ध्यान नहीं देते। वे औलाद की भावनाओं को आहत करते रहते हैं। इससे बच्चे गलत रास्ते पर चले जाते हैं। अत: आवश्यकता है 'मोह' और 'उपेक्षा' के स्थान पर शुद्ध स्नेह और उचित देखभाल के कर्त्तव्य को निभाने की।

लाभप्रदत्ता या लोभप्रदत्ता

इस तमोप्रधान युग में विकारों का प्रदर्शन एक सामान्य बात हो गई है, बल्कि विकारों को एक प्रकार से

सामाजिक मान्यता (Social Recognition) मिल गई है। विश्व के लगभग हर देश में वेश्यावृत्ति को एक रोजगार (Occupation) के रूप में स्वीकार कर लिया गया है जो कि काम विकार का खुला प्रदर्शन है। अदालतों में प्रतिद्वंद्वी वकीलों की बहस हो या चुनावी सभा में नेताओं के भाषण, उनमें जो जितने क्रोध में विपक्षी पर आरोप-प्रत्यारोप लगा सके, वही ज्यादा काबिल माना जाता है। विश्व में जितने भी सरकारी, गैर-सरकारी या निजी उद्योग या व्यवसायिक संस्थाएँ हैं सभी में सर्वोच्च लक्ष्य 'लाभप्रदत्ता' का होता है जो कि वास्तव में लोभप्रदत्ता ही है। **अन्यथा होना यह चाहिए कि एक निश्चित प्रतिशत में लाभ (percentage of profit) की प्राप्ति के बाद अर्जित हुई रकम को जनकल्याण के कार्य में लगी संस्थाओं को दान कर दिया जाये।** अहंकार का विस्तार विश्व में वैसे ही है जैसे वायु का फैलाव या उपलब्धता। जिस प्रकार, भू-तल से ऊँचाई की तरफ बढ़ने पर वायु की उपलब्धता कम होती जाती है, उसी प्रकार जैसे-जैसे एक पुरुषार्थी या महापुरुष अपने आत्मिक स्वरूप में ऊपर उठता जाता है उसका अहंकार समाप्त होता जाता है। परन्तु आज जिधर देखो उधर मनुष्य भू-तल पर ही दिखाई देते हैं।

'मोह' को मधुमक्खियों के छत्ते या पेटिका से भी समझा जा सकता है। तीन प्रकार की मधुमक्खियों के समूह से उनका एक परिवार बनता है, जो हैं रानी, श्रमिक एवं ड्रोन (नर मधुमक्खी)। श्रमिक या पुरुषार्थी मधुमक्खियाँ कर्मयोगी स्थिति का श्रेष्ठ उदाहरण हैं। ये तीन किलोमीटर तक के दायरे से निरन्तर शहद इकट्ठा करती रहती हैं परन्तु शहद के चिपचिपे होने पर भी उसमें फँसती नहीं हैं। परन्तु मनुष्य सम्पत्ति व बाल-बच्चों का संचय करते हुए उनके मोह रूपी शहद में फँस जाते हैं, चिपक जाते हैं। मक्खियों के पंख हमेशा सूखे बने रहते हैं, परन्तु मनुष्यों की बुद्धि व विवेक रूपी पंख, मोह रूपी शहद से ऐसे चिपक जाते हैं कि वे फिर अलौकिक, आध्यात्मिक तथा ईश्वरीय स्नेह व आनन्द की उड़ान का अनुभव कर नहीं पाते। श्रमिक मक्खियाँ दूर-दराज में पुष्पों से शहद का संचय करते हुए भी अपना बुद्धियोग रानी मक्खी से लगाये रखती हैं। यदि रानी मक्खी छत्ते या पेटिका को त्याग कर अन्य स्थान हेतु उड़ पड़ती है तो सारी मक्खियाँ अपना-अपना कार्य छोड़ रानी मक्खी का अनुसरण करने लगती हैं। यह उनका रानी मक्खी से बुद्धियोग ही है जो उन्हें तत्काल सूचना मिल जाती है परन्तु मनुष्य मोह में अन्त समय या अन्तिम साँसों तक ऐसे फँसे रहते हैं कि आत्मा न तो लौकिक व स्थूल मोह माया से अपना बुद्धियोग छुड़ा पाती है और न ही परमात्मा का अनुसरण याद के द्वारा कर पाती है। तीसरे प्रकार की मक्खियाँ (ड्रोन) कोई कार्य नहीं करती, बस बैठे-बैठे श्रमिक मक्खियों द्वारा संग्रहीत शहद को खाती रहती हैं। ये काले रंग की होती हैं और महाआलसी, कामचोर एवं निखट्टू होती हैं। आज कलियुग में भी ऐसे ही मनुष्यों की बहुतायत है जो अपने पूर्वजों द्वारा संचित नैतिक, आर्थिक व आध्यात्मिक सम्पदाओं के बचे-खुचे भाग को भी चट करने में लगे हुए हैं।

ज्ञान का शत्रु है मोह

मोह का ज्ञान से 'छत्तीस' का आँकड़ा है। मन में जब तक मोह है, ज्ञान आ नहीं सकता और जब ज्ञान आ गया तो मोह रह नहीं सकता। ज्ञान आना अर्थात् ज्ञान स्वरूप होना, न कि 'ज्ञान-सा रूप' होना, जैसा कि आज के स्व-घोषित ज्ञानियों का है। आज मनुष्य यदि आध्यात्मिक ज्ञान या पुरुषार्थ से एवं परमात्मा से दूर हो गये हैं, तो उसका एक कारण मोह भी है। **मनुष्यों का अपने परिवार या सन्तान से इतना लगाव या मोह**

हो गया है कि वे अपने दैनिक जीवन में उपलब्ध अतिरिक्त समय को परिवार या सन्तान में ही व्यतीत कर देते हैं और आध्यात्मिक ध्यान-साधना हेतु समय निकालने में लाचारी दिखाते हैं। उनका जितना मोह परिवार के सदस्यों की काया से होता है उसका दसवाँ हिस्सा भी जन्म-जन्म के संबंधी परमात्मा से नहीं होता क्योंकि परमात्मा के यथार्थ स्वरूप की पहचान और उनकी समीपता की अनुभूति उन्हें नहीं होती। ऐसे मनुष्य मानो अपने को एक मोह रूपी आवरण से ढके रहते हैं, जो (आवरण) आध्यात्मिक ज्ञान-प्रकाश को अन्दर आने नहीं देता है। मोह का होम (नाश) कैसे हो ? इसका आधार बुद्धि और विवेकजनित समझ होनी चाहिए। उत्तम तो यह होगा कि बजाय हमारे मोह के खात्मे का निमित्त कोई और मनुष्य बने, हम खुद ही इसे बाहर का रास्ता दिखा दें। मोह विकार स्वाभाविक व अलौकिक व्यक्तित्व को पनपने नहीं देगा।

मोह का जाल ज्ञानेन्द्रियों पर

मोह रूपी दुश्मन की उपस्थिति के कई लक्षण हैं। जब स्मृति में किसी लौकिक प्रियवर की ही बातें बार-बार उभर आएँ, जब वृत्ति उस एक के कल्याण के प्रति कुछ ज़्यादा ही सक्रिय हो जाये, जब दृष्टिकोण उस एक का नाम या ध्यान आते ही सामान्य से ज़्यादा लचीला हो जाये, जब उस एक के कल्याण हेतु मन कुछ भी कर बैठने (कृति) को तैयार रहे चाहे अच्छा कार्य हो या बुरा, जब स्व-स्थिति उस एक की स्थिति के अनुसार बने या बिगड़े, जब सारी सृष्टि में वह सबसे ज़्यादा प्रिय या मनमोहक लगने लगे, जब परमात्मा की पूजा, आराधना या ध्यान करते हुए भी मन-बुद्धि उस एक की तरफ चले जायें, जब उस एक के अवगुण दिखने बंद हो जायें और यदि दिख भी जायें तो विवेक जागृत न हो, तब समझ लें कि मोह विकार ने मीठा जाल बिछा दिया है। आज मनुष्य यह जानते हुए भी कि "माया आयेगी, जाल बिछायेगी, दाना डालेगी, मोह से उसमें फँसना नहीं", माया के दाने चुगने लगते हैं और मोह-जाल में फँस जाते हैं। यह मोह विकार का इन्द्रजाल ही है जो ज्ञानेन्द्रियों पर भी जाल डाल देता है। एक समय ऐसा भी था (सतयुग) जब इस धरा पर बहुत थोड़े मनुष्य थे और सभी की दूसरों के प्रति सोच निर्विकारी, अव्यभिचारी और भाईचारे वाली थी। सभी का दृष्टिकोण "वसुधैव कुटुम्बकम्" वाला था और सम्पूर्ण सृष्टि पर एक राज्य, एक धर्म और एक मत का आधिपत्य था। अपनी सन्तान व दूसरे की सन्तान के प्रति एक-सा अनुराग था। समय बीतता गया और कई राज्य स्थापित हो गये। इससे मनुष्यों में स्वदेश व परदेश जैसी सोच बनने लगी। द्वापरयुग से अन्य धर्मों की स्थापना होने लगी। इससे मनुष्यों में अपने-अपने धर्मावलम्बियों या धर्मानुयायियों के प्रति विशेष अनुराग पैदा हुआ और दूसरे धर्मों के प्रति प्रतिस्पर्धा की भावना आने लगी। फिर "वसुधैव कुटुम्बकम्" से वसुधैव गायब हो गया, बस, मैं और मेरा कुटुम्ब अनुराग का दायरा इसी परिधि में संकुचित होकर रह गया और वह भी विकारी अनुराग क्योंकि अनुराग के साथ यह स्वार्थ आ गया कि पुत्र बुढ़ापे में मेरा सहारा होगा या फलां सम्बन्धी आड़े वक्त में सम्बन्ध निभायेगा इत्यादि। परन्तु तमोप्रधान कलियुग के प्रभाव से आज परिवार के सदस्यों में भी अलगाव और बिखराव आ गया है। सम्बन्ध यन्त्रवत् निभाये जा रहे हैं और मोह का दायरा 'स्वयं प्रति' मात्र रह गया है। एक नया रूप पेश आया है जो मात्र मैं या मेरा तक प्रभावी रह गया है। आज दिख रहे घर-घर के झगड़े, बाप बेटे में विवाद, पति-पत्नी की मुकदमेबाजी, भाई-भाई का खून-खराबा, माँ-बाप द्वारा सन्तान को सम्पत्ति से बेदखल किया जाना इत्यादि 'स्वार्थ रंजित स्व प्रति मोह'

के ही रूप हैं।

मोह-जीत बनने में है शाश्वत कल्याण

आज सौर-मण्डल में 18 किलोमीटर प्रति सेकेण्ड की निराली गति से भागती यह कुदरत की बेहद खूबसूरत वसुन्धरा (पृथ्वी) मोहमाया की धुँध में लिपटी पड़ी है। पूरा मानव समुदाय मोह की फैली धुँध में अपने पथ से भटक गया है। वह न तो अनोखी वसुन्धरा में सर्वत्र बिखरे प्राकृतिक सौन्दर्य का नयन-पान कर पा रहा है, न मनुष्य-जीवन के अनमोल क्षणों को भरपूर जी पा रहा है, न दिव्य गुण व शक्तियों की ईश्वरीय सौगात का इस्तेमाल कर पर रहा है और न ही दिव्य-ज्ञान की स्मृति से नष्टोमोहा बन, सतयुगी राज्य हेतु प्रालब्ध इकट्ठी कर पा रहा है। जिस प्रकार, अति धुँधमय मौसम में विमान उड़ान नहीं भर पाते और सारी गतिविधियाँ ठप्प हो जाती हैं, उसी प्रकार मोह रूपी धुँध की अधिकता से मनुष्यों की दिव्य बुद्धि व विवेक, आध्यात्मिक उड़ान नहीं भर पा रहे हैं। उसके सात आत्मिक गुणों की गतिविधियाँ ठप्प पड़ी हुई हैं। मानो, उसके जीवन रूपी इमारत में लगे सात फ्यूज-वायर (fuse-wire) उड़ गए हों और इमारत में अन्धेरा फैला हो। ऐसी विकट परिस्थिति में परमात्मा शिव, मनुष्यों की खोई सम्पदाओं को वापस प्राप्त कराने तथा अलौकिक प्राप्तियाँ कराने हेतु 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा' का मूलमन्त्र पक्का करा रहा है। जब तक मोह नष्ट नहीं होगा, तब तक आत्मिक गुण, शक्तियों की पुन: स्मृति आ नहीं सकती, संस्कारों में दिव्यता अलौकिकता नहीं आ सकती तथा जीवनमुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। सर्वोच्च उपलब्धि जीवनमुक्ति हेतु किये जाने वाले पुरुषार्थ की शुरूआत 'मोह-जीत' बनने से ही सम्भव है।

अन्तिम सेवा फ़रिश्ता........पृष्ठ 12 का शेष

पास आ जाता है। एक संकल्प, हम कितने सेकण्ड में कर सकते हैं? बाबा ने कहा है कि ऐसी स्थिति में बस दिल से कह दो 'मेरा बाबा' तो बाबा मदद के लिए आ जायेगा। एक साधारण मनुष्य इतनी दूर से मदद कर सकता है तो भगवान क्या नहीं कर सकता! भगवान सिर्फ मेरा या आपका नहीं, भगवान तो हम सबका है। जब वह भक्तों को मदद करता है तो बच्चों को क्यों नहीं करेगा?

हमें मदद लेनी नहीं देनी है

हमें कर्मातीत स्थिति बनानी है। घटना से हम भले ही 10 हज़ार मील दूर हों, हम मदद कर सकेंगे। मन की शक्ति से हम बहुतों की मदद कर सकते हैं। हमें विनाश की तैयारी करनी है। सन् 1985 की मुरली में बाबा ने बोला था कि विनाश के समय चारों तरफ से आग आयेगी। एक आग पाँच तत्वों की होगी। उससे हमें बचना है। हमें निर्भय बनना है। थोड़ा भी अन्दर में भय होगा तो विनाश की आग हमें पकड़ लेगी। हमें भगवान की शीतल छाया में रहना है ना कि बचाओ-बचाओ कहने वालों की लाइन में। दूसरी आग है देह, देह के सम्बन्ध और पदार्थों के लगाव की आग। इसका अंश मात्र भी हुआ तो हम नहीं बच सकेंगे। हम मदद लेने वालों की कतार में आ जायेंगे जबकि हमें मदद देनी है। हमें तो फ़रिश्ता बनना है। योगाग्नि से ही हम पाँच विकारों रूपी आग को जीत सकते हैं। इन पर अंकुश लगा सकते हैं। लगावमुक्त स्थिति, वैराग्य वृत्ति, नष्टोमोहा स्वरूप ही हमें योग लगाने में मदद करता है। तब हम सच्ची-सच्ची सेवा कर सकेंगे। अभी तो हम वाचा सेवा ज़्यादा करते हैं परन्तु उस समय ब्रह्मा बाप समान फरिश्ते रूप से सेवा करनी पड़ेगी। प्यारे बाबा ने डबल विदेशियों को दृष्टि देकर, साक्षात्कार करवा कर, ज्ञान देकर, अनुभव करवा कर कितनी सेवा की है। एक फ़रिश्ते ने कितना किया! अगर कई सारे फ़रिश्ते हो जायें तो

हृदय रोग – एक सफल रूहानी शोध

– हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता, ग्लोबल हॉस्पिटल, शान्तिवन

विश्व में और खास भारत में हृदयरोगियों की संख्या बहुत बढ़ चुकी है। 40% मृत्यु (सारे विश्व में) हृदयाघात के कारण होती हैं। हृदयाघात के सम्बन्ध में भारत का स्थान पहला है। भारत भर में लगभग 10 करोड़ हृदयरोगी हैं और लगभग हर वर्ष 60 से 70 लाख नए हृदयरोगी इस पंक्ति में आ खड़े होते हैं। हृदयाघात से पीड़ित होने वाले 100 में से 25 लोग तो हॉस्पिटल पहुँचने से पहले ही देह त्याग देते हैं। यह खतरनाक बीमारी अब महामारी का रूप धारण कर चुकी है। सन् 1992 में विश्व स्वास्थ्य संघ ने इस रोग के सम्बन्ध में रिपोर्ट दी थी कि यदि अभी भी भारत देश के लोग नहीं जागे तो 2015 तक हर तीसरे आदमी को हृदयरोग हो जाएगा। वर्तमान आँकड़ों के अनुसार, 10 करोड़ लोग जानते हैं कि उनको यह बीमारी है परन्तु 10 करोड़ ऐसे भी हो सकते हैं जिनको स्वयं में उभर चुकी बीमारी की जानकारी ही नहीं है।

सन् 1960 में 1% लोगों को हृदय का रोग था। उस समय कहा गया कि सन् 2000 तक 3% लोगों को हृदय की बीमारी हो जाएगी परन्तु हुआ क्या? लगभग 12% लोगों को हृदय रोग हो गया अर्थात् अनुमान से 4 गुणा ज्यादा बीमारी बढ़ गई। इसी प्रकार, अनुमान है कि 2015 तक हर तीसरे आदमी को हृदय की बीमारी हो जाएगी। विद्यालय में जाने वाले बच्चे को भी यह बीमारी हो सकती है। चौबीस या पच्चीस साल के लोगों को तो यह बीमारी अभी भी है। भारत सरकार का स्वास्थ्य मन्त्रालय इन बातों के प्रति जागरुक है। सन् 1995 में मुझे प्यारे बाबा ने कुछ दिव्य अनुभूतियाँ इस रोग के निवारण के सम्बन्ध में कराईं और मन्त्रालय ने भी मुझे कहा कि आप ऐसा कार्य करो कि बिना ऑपरेशन और एन्जियोप्लास्टी के बीमारी ठीक हो जाए। सबसे बेहतर तो यह है कि बीमारी हो ही नहीं। ऑपरेशन या एन्जियोप्लास्टी कराना बहुत महँगा है। फिर इनके द्वारा मूल बातों का इलाज भी नहीं हो पाता है। तब एक
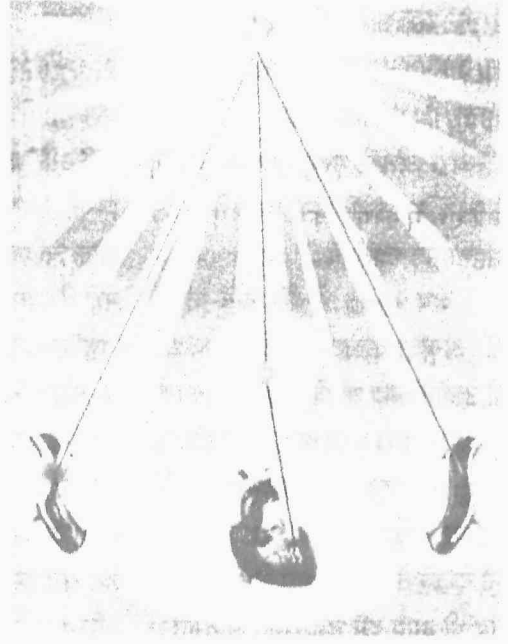
बहुत सुन्दर कार्यक्रम बनाया गया। सिंगापुर में 'एशियन पेसिफिक कान्फरेन्स ऑफ कार्डियोलॉजी' के नाम से एक सम्मेलन हुआ जिसमें इस कार्यक्रम के सफल परिणाम प्रस्तुत किए गए। सभी ने उनकी सराहना की और रुचि भी ली।

आप जानते हैं कि हमारे गलत खान-पान और सोच-व्यवहार का हृदय की धमनियों पर बुरा असर आता है। जीन्स भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। जीन्स के साथ-साथ सोच भी बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। मनुष्य जितना नकारात्मकता में जाते हैं उतनी ही ज्यादा और जल्दी बीमारी हो जाती

है। चालीस साल से पहले जो हृदयाघात होता है वह अपनी रचना होता है, हम खुद उसे पैदा करते हैं परन्तु 80 साल की आयु के बाद यह आघात परमात्मा का वरदान माना जाता है। भगवान भी कहते हैं - **''सबसे अच्छी मृत्यु हृदयाघात की है क्योंकि इसमें बिना तकलीफ के आत्मा उड़ जाती है।''**

जब 1995 में मैं पहले-पहले डॉ. अब्दुल कलाम जी से मिला था तो उन्होंने कहा था कि आप इस कार्य को शुरू करो। सरकार को निवेदन करो, हम मदद करेंगे। सन् 1998 में नवम्बर में वे पहली बार इस कार्यक्रम को देखने के लिए आए थे आबू में। जब भी आए इसे बड़े ध्यान से देखा। सन् 2002, फरवरी में आए तो भी मुझे पास बिठा कर कहा कि आपका इस कार्यक्रम के सम्बन्ध में जैसे ही परिणाम तैयार हो, हमें बताओ। उस समय वे राष्ट्रपति नहीं थे। उन्होंने कहा - **''इसका प्रचार हर शहर-कस्बे में जाकर मैं करूँगा।''** वे अब भी जहाँ भी जाते हैं तो बताते हैं कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के इस प्रोजेक्ट में हृदयरोगी, बिना ऑपरेशन के ठीक हो सकते हैं। यह व्यवहारिक परिणाम है।

क्या है हृदय रोग

धमनियों के अवरोध लगभग 10 साल की आयु से ही बनने प्रारम्भ हो जाते हैं और धीरे-धीरे 2%, 3%, 4%, 5%, 15%, 20% ऐसे बढ़ते जाते हैं। अवरोध जब 70% तक पहुँच जाता है तब छाती में दर्द होता है, घबराहट होती है और धड़कन भी बढ़ जाती है। हृदय के दाएँ तरफ एक और बाएँ तरफ दो धमनियाँ होती हैं जो हृदय को खून देती हैं। हृदय सदा चलता रहता है, कभी रुकता नहीं है। हम चाहे सोएँ, चाहे कुछ करें यह रुकता नहीं। यह एक बार सिकुड़ता है फिर फैलता है। यह 0.3 सेकण्ड सिकुड़ता है और 0.5 सेकण्ड आराम करता है। हृदय के निरन्तर काम करने का राज़ यही है कि यह हर धड़कन में 0.3 सेकण्ड काम करता है और 0.5 सेकण्ड आराम करता है। इसलिए सारी उम्र काम करता है। जब उसका आराम का समय कम हो जाए अर्थात् 0.5 सेकण्ड के स्थान पर 0.4 सेकण्ड हो जाए तो उसमें ज़हरीले पदार्थ इकट्ठे होने शुरू हो जाते हैं।

हृदय रोगों के लिए बाई पास सर्जरी आदि की विधियाँ सन् 1961 में प्रयोग होनी प्रारम्भ हुईं। उस समय पता लग गया था कि ऐसे रोगी का खाना-पीना क्या होना चाहिए। फिर भी बीमारी के 12 गुणा बढ़ने का कारण है आधुनिक जीवन की तेज गति पर आधारित जीवनचर्या। आज दबाव है, मानव दौड़ रहा है, वह जल्दी में है। यह जल्दबाजी ही हृदय रोग का सबसे बड़ा कारण है। सोचना, बोलना, कार चलाना कुछ भी करना है तो बहुत धीरे-धीरे करो। इसमें फालो फादर (भगवान का अनुसरण) करो। असुरक्षा, डर, गुस्सा आदि भावनाएँ हृदय रोगों का कारण हैं। ऐसे विचारों के कारण हृदय के सिकुड़ने का समय तो 0.3 सेकण्ड ही रहता है परन्तु आराम का समय 0.5 सेकण्ड से घटकर 0.4 सेकण्ड रह जाता है। हृदय 70 बार धड़कने की बजाए 90 बार धड़कता है। चाय, कॉफी आदि पदार्थ भी धड़कन बढ़ा देते हैं। एक कप चाय पीने से धड़कन 8 बढ़ जाती है और 4 घण्टे तक बढ़ी रहती है तथा 64 घण्टों तक खून में उसका असर रहेगा। एक कप और पी लेंगे तो 16 बढ़ जाएगी। इसका परिणाम यह होगा कि हृदय का आराम का समय कम होता जाएगा और उसमें जहरीले पदार्थ इकट्ठे होते जाएँगे। इसलिए कोई भी कार्य ऐसा मत करो जिसमें हृदय को जल्दी-जल्दी धड़कना पड़े। वह आपका साथी है, जब तक वह है, जीवन है। दोनों फेफड़ों के बीच हृदय होता है। बायीं तरफ गन्दा खून होता है अर्थात् उसमें कम ऑक्सीजन होती है और दायीं तरफ अच्छा खून होता है जिसमें ज्यादा ऑक्सीजन होती है। हृदय को अपने लिए भी खून चाहिए जो उसको

पतली-पतली शिराओं के माध्यम से मिलता है।

हृदय रोग के चिन्ह

जब हम सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, वजन उठाते हैं या दौड़ते हैं उस समय यदि छाती में दर्द होता है या घबराहट होती है, पसीना आता है, धड़कन तेज होती है तो समझो कि ये बीमारी के लक्षण हैं। बहुत ठण्डे, बहुत गर्म मौसम में यदि छाती में भारीपन आता है तो समझो हमें हृदय रोग है। रोग की पहचान बहुत आवश्यक है। पैंतीस साल की उम्र के बाद अपना कोलेस्ट्रोल, शुगर आदि टेस्ट करा लें। ई.सी.जी. कराके देख लें। रोग न हो तो भी यह परीक्षण अवश्य करा लें। कहते हैं कि इलाज से परहेज अच्छा। आघात होने के बाद कुछ करेंगे तो देर हो जाएगी। पहले से ही सुरक्षा करें। चिन्ता, जल्दी, गुस्सा, बहुत उदासी, टाइप ए व्यवहार, हर बात में अपनी चलाना, लोग मेरे को ही पूछें, सबसे आगे मैं रहूँ आदि वृत्तियाँ भी इस रोग को पैदा करती हैं। इनसे हमें बचना चाहिए।

हृदय की धमनियाँ रबड़ जैसी होती हैं और गर्मी-सर्दी के बढ़ने पर जैसे ही हृदय में रक्त की माँग बढ़ती है तो धमनियाँ खुल जाती हैं और रक्त ज़्यादा चला जाता है। जब धमनियाँ बन्द हो जाती हैं तो (बन्द होने का कारण है मक्खन जैसा थक्का जम जाना जिसे कोलेस्ट्रोल कहते हैं) ये प्लास्टिक जैसी हो जाती हैं। जब हम भागते हैं या गुस्सा करते हैं तो हृदय की रक्त की माँग बढ़ती है परन्तु धमनियाँ खुलती नहीं हैं, रक्त प्रवाहित होता नहीं है, इस कारण फिर छाती में दर्द होता है।

हृदयाघात में 25% लोग 3-4 घण्टे के अन्दर चले जाते हैं। खून का जब थक्का जम जाता है तो हृदयाघात हो जाता है। इसके लिए कोई दवाई अभी तक सही इलाज के रूप में नहीं बनी है। यह वास्तव में कर्मों का खाता है। इसके लिए अच्छे कर्म करने पड़ेंगे। कई लोगों ने कई प्रकार के आसनों का प्रयोग किया। आसनों के अभ्यास से अवरोध खुले नहीं, हाँ, वहीं के वहीं रुक अवश्य गए। जब मन्त्रालय ने हमें बिना ऑपरेशन के बीमारी को ठीक करने और बीमारी हो ही नहीं, इस आशय को लेकर यह कार्यक्रम सौंपा तो पहले-पहले यही कहा कि राजयोग नई चीज़ है, हम इसे जानते नहीं, आप इसमें प्राणायाम या शवासन ज़रूर जोड़िए। मैंने कहा कि नहीं, हम राजयोग से ही इसमें सफलता प्राप्त करके रहेंगे। मैंने दृढ़ता से कहा - **''भले ही आप अपना सहयोग वापस ले लें पर हम राजयोग के द्वारा ही करेंगे। हम एक बार में एक ही दवाई (राजयोग) देकर देखेंगे। अनेक प्रकार के रास्ते अपनाएँगे तो कैसे पता पड़ेगा कि फायदा किससे हुआ है। तो वे सहमत हो गए।''**

एन्जियोप्लास्टी क्या होती है?

इसमें धमनी में एक गुब्बारा-सा डालते हैं और उसे फुला देते हैं। अन्दर एक स्टंट लगा देते हैं जिसका खर्चा एक बार में डेढ़ से दो लाख तक आता है परन्तु ऐसा करने पर एक वर्ष या छः मास में पुनः अवरोध खड़े हो जाते हैं। धमनी पुनः अवरुद्ध हो जाती है। देहली छोड़ कर आबू पर्वत स्थित हॉस्पिटल आने के पीछे मेरी एक गहन अनुभूति है। देहली में मेरे सामने हृदय रोगी आते थे, हम उनकी एन्जियोप्लास्टी कर देते थे। हॉस्पिटल पैसे ले लेता था पर डेढ़ मास बाद ही दुबारा आघात हो जाने

डॉ. सतीश गुप्ता
सीनियर कन्सलटेण्ट, कार्डियोलॉजी एवं मेडीसिन
ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर,
पोस्ट - शान्तिवन (आबू रोड़), राजस्थान - 307510
फोन: 02974 - 228101, 228129 **फैक्स:** 228116
E-mail - shantivan @ bkindia . com

की स्थिति में रोगी को पुन: आना पड़ता था। एक ऐसे मामले में जब रोगी की दुबारा एन्जियोग्राफी की गई और फिर उसे कहा गया कि अब एन्जियाप्लास्टी भी पुन: करानी पड़ेगी तो उस रोगी ने मुझे एक तरफ बुलाकर पूछा कि जब हम पहले आए थे तो आपने एन्जियोप्लास्टी कराने को कहा, मैंने करा ली। उस समय मैंने घर बेच दिया था, अब मैं क्या बेचूँ? यह बात मुझे अन्दर बहुत गहरे तक लग गई। मेरे मन में आया कि हम जो कर रहे हैं यह सब ठीक विधि नहीं है बीमारी के मूल तक हम नहीं पहुँच रहे हैं, कुछ नया करना चाहिए। मेरा चिन्तन चलता था कि मैं बाबा से पूछूँ कि सही इलाज क्या है? जब कोई बात लग जाती है तो बाबा भी साथ देता है और प्यारे शिव बाबा ने मुझे बहुत सुन्दर दिव्य अनुभूतियों द्वारा व्यवहारिक समाधान सुझाए।

बाई पास सर्जरी क्या है?

उसमें ब्लॉकेज वहीं रहते हैं। खून को दूसरी तरफ से प्रवाहित करवा दिया जाता है। हम दिन-रात ग़लत सोच कर, बोल कर, कर्म करके अपनी धमनियों को अवरुद्ध कर लेते हैं। आराम पसन्द बन जाते हैं। पैदल चलना छोड़ कर बीमारी को बुलाते हैं।

▲▲

कौन बड़ा? बात या बाप

– ब्रह्माकुमार उमेश, सूरत

मुसीबतों के समय कभी ऐसा मत कहो कि ''ओ प्रभु, मेरे पास बहुत बड़ी समस्या आई है।'' समस्या से कहिये कि ''ओ समस्या, मेरे पास बहुत बड़ा भगवान है।'' (In time of difficulties, don't ever say, "God, I have a big problem", but say, "Hey problem, I have a big God" and everything will be Ok.) कितना अच्छा है यह सुवाक्य! जिंदगी में आये दिन छोटी-बड़ी समस्यायें और विघ्न आते रहते हैं। वास्तविक जिंदगी यही है कि उन विघ्नों को हटाकर अपना रास्ता निकालकर चलते ही रहें। समस्याओं के सामने घुटने टेक देने से, अपनी यात्रा रोक देने से समस्या हम पर हावी हो जाती है। यह भी संभव है कि हमारी प्रगति ही रुक जाये। अपने या औरों के पूर्वानुभवों से शिक्षा ग्रहण करके और हिम्मत न हारके आगे बढ़ते रहना ही मनुष्य का काम है। इसमें हमें प्रभु की मदद लेनी चाहिये। लेकिन मदद लेने में भी सकारात्मक दृष्टिकोण हो। सकारात्मक दृष्टिकोण अर्थात् हम हिम्मत न हारें और समस्या को चुनौती दें कि तू कैसा भी विकराल रूप धारण करके आ, मेरे साथ बहुत बड़े, सर्वशक्तिवान, मेरे रखवाले भगवान हैं, उनकी मदद से मैं सुरक्षित रह सकता हूँ।

भगवान के आगे मुसीबत के नाम पर रोना नकारात्मक दृष्टिकोण है। उस इंसान की भगवान भी मदद नहीं करते, जो खुद की मदद नहीं करता। खुद की मदद करना माना हिम्मत न हारना, विजय के लक्ष्य के साथ कैसी भी कठिन समस्या का डटकर मुकाबला करना। लेकिन केवल मुसीबतों के समय ही भगवान को याद करना, यह भी तो सरासर गलत है। यदि मुसीबत आने से पहले ही उसकी निरंतर स्मृति हो तो मुसीबत आएगी ही नहीं। अगर प्रभु में दृढ़ निश्चय है तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। किसी कवि ने कहा है ''जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान।'' प्यारे शिव बाबा भी कहते हैं – मीठे बच्चे, परमात्मा पिता को बड़ा समझोगे तो जीवन में आने वाली बातें स्वत: छोटी हो जाएंगी। इसलिए कभी यह न कहो – क्या करूँ? बात ही इतनी बड़ी थी वरन् यह कहो कि मेरा बाप भगवान इतना बड़ा है कि उसके आगे ये बातें तो राई से भी छोटी हैं अर्थात् नगण्य हैं।

लोगों को प्राण दान देती ओमशान्ति हेल्प लाइन

ओमशान्ति हेल्प लाइन को फोन करने से कोई भी व्यक्ति जो तनाव, निराशा, आत्महत्या के विचार व नकारात्मक विचारों से ग्रसित हैं तुरन्त समाधान व राहत पा सकते हैं। जीवन को उत्साह व खुशी से भरपूर करने के लिए रोज आध्यात्मिक ज्ञान, गुण और शक्ति संपन्न श्रेष्ठ विचार भी सुन सकते हैं।

यह जो आपकी हेल्प लाइन शुरू हुई है इससे लाखों लोगों को फायदा हुआ है। आज जो महंगाई का युग है, भौतिकता का समय है जहाँ हर आदमी तनावग्रस्त है तो तनाव से मुक्ति दिलाने के लिए यह हेल्प लाइन बहुत अच्छी है। टेलीफोन में 3 मिनट में ही राजयोग द्वारा चिन्ता व तनाव से मुक्ति की विधि मिल रही है। आज तरह-तरह की बीमारियाँ जैसे डायबिटीज, ब्लड प्रेशर आदि चिन्ता एवं तनाव से हो रही हैं। जब तक व्यक्ति चिन्ता से मुक्त नहीं होगा तब तक बीमारियों से मुक्त नहीं होगा। इसका एक अच्छा प्रयास है हेल्प लाइन। आज जो छोटे-छोटे क्राइम हो रहे हैं ये तनाव की स्थिति में ही हो रहे हैं। इस प्रकार यह हेल्प लाइन सरकार के लिए भी मददगार सिद्ध हो रही है – **भ्राता मंगतराम सिंहल, मंत्री, दिल्ली।**

भारतवासियों को शांति और सुख देने के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक नियम प्रयोग में लाये जा रहे हैं लेकिन मार्गदर्शन के लिए एक अच्छी संस्था की आज बहुत आवश्यकता है। ऐसी रास्ता दिखाने वाली एक मात्र संस्था ब्रह्माकुमारियों की है। मेडिटेशन द्वारा मानसिक शान्ति मिलती है। अब इसके लिए ओम् शान्ति हेल्प लाइन एक अच्छा माध्यम है। सभी वर्ग के लोगों के लिए सुख, शांतिमय जीवन जीने का यह एक अनोखा उपाय है। इस हेल्प लाइन का आप सब भी इस्तेमाल कर अपनी समस्याओं का हल पाइये **– भ्राता श्याम प्रसाद, सिविल जज, विशाखापट्टनम।**

12 वर्षों से मैं लगातार डायबिटीज से ग्रस्त हूँ। मुझे जीने की कोई उम्मीद नहीं थी। अचानक ही हेल्प लाइन के बारे में मुझे जानकारी प्राप्त हुई। तो मैंने हेल्प लाईन को कॉल किया। उसमें मुझे डिप्रेशन से मुक्त होने की विधि सुनकर बहुत अच्छा लगा। मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेन्द्र पर जाने लगी। वहाँ के शांत वातावरण से मैं बहुत ही प्रभावित हुई। योग अभ्यास से मुझे बहुत ही मानसिक शक्ति प्राप्त हुई। अब मैं अपने को पहले से बहुत अच्छी महसूस कर रही हूँ – **बहन स्वप्ना, कालीकट।** ❑

ओमशान्ति हैल्प लाइन नम्बर — अधिक जानकारी के लिए देखे : www.omshantihelpline.com

क्र.	स्थान	नम्बर
1.	भैरहवा (नेपाल)	– 527335
2.	बुटवल, नेपाल	– 549550
3.	पोखरा, नेपाल	– 535133
4.	अहमदाबाद	– 26408185, 26408696
5.	अमलापुरम्	– 234000
6.	बीजापुर	– 224643
7.	भुवनेश्वर	– 2545611
8.	भीलवाड़ा	– 232324
9.	बठिण्डा	– 2221684
10	बैंगलोर	– 26527098, 26603355
11.	बहादुरगढ़	– 238980
12	कालिकट	– 2771464
13.	चेन्नई	– 26202855
14.	कड़प्पा	– 221122
15.	दिल्ली	– 27034050, 25863788, 27679491
16	धर्मपुर	– 264688
17.	धुले	– 223113
18.	गान्तोक	– 201444
19.	गोवा	– 2414111
20	जामनगर	– 2558480
21.	जलगाँव	– 2233399
22.	कानपुर	– 2304764
23.	कोल्हापुर	– 2624321
24	कोरबा (गेवरा)	– 52610
25.	कामारेड्डी	– 221003
26.	कोट्टायम	– 2561122
27.	कर्नूल	– 251252
28.	मुंबई	– 55982444
29.	विशाखापट्टनम	– 2525858
30.	गाजियाबाद	– 2703755
31.	तिरुवनन्तपुरम	– 2740088
32.	मदुरै	– 2641001
33.	मोहाली	– 2274024
34.	नाशिक	– 2466977
35.	पुणे	– 25697676
36.	पठानकोट	– 2233336
37.	रीवा	– 503884
38.	सोलापुर	– 2627426
39.	सातारा	– 232150
40.	सिरसा	– 226000
41.	सिलीगुड़ी	– 2640160
42.	तिरुपति	– 5560994
43.	तुत्तुकुड्डी	– 2312137
44	जमशेदपुर	– 2225565
45.	नेल्लूर	– 2334499
46	मोहातूर	– 250505
47.	मानसा	– 501974
48.	जम्मूतवी	– 2562500

गतांक से आगे ......

गीता का भगवान

– ब्रह्माकुमार महावीर सिंह खर्ब, सोनीपत

पिछले अंक में हमने श्रीमद्भगवद्गीता के नाम, उसमें वर्णित भगवान के स्वरूप, निवास, विभिन्न नाम, विभिन्न सन्तों के विचार, 16 कला सम्पन्न श्री कृष्ण की महिमा, गीता का सन्देश आदि बातों के आधार पर यह चिन्तन किया कि गीता के भगवान वास्तव में सृष्टि के बीज रूप, निराकार, पारलौकिक परमपिता परमात्मा, त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, अकालमूर्त परमात्मा हैं जो कि रूप में ज्योति-स्वरूप हैं। अब आगे के विचार-बिन्दु पढ़िए।

– सम्पादक

समस्त विश्व में परमात्मा के स्मारक – भारत में भगवान शिव की प्रतिमाएँ ज्योतिर्लिंगम के रूप में लाखों मन्दिरों में पाई जाती हैं। कश्मीर में अमरनाथ, कन्याकुमारी में रामेश्वरम्, सौराष्ट्र में सोमनाथ मन्दिर तथा शिवकाशी का विश्वनाथ मन्दिर शिव के ही हैं। इटली के ईसाई और रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय द्वारा इस आकार के पत्थर को अपने ढ़ंग से सम्मान दिया जाता है तथा शिव को जेहोवाह् (Jehovah) नाम से याद किया जाता है। इस्राइल में यहूदी लोग शपथ को सच्चा प्रमाणित करने के लिए शिवलिंग के आकार वाला पत्थर हाथ में लेते हैं। भारत में शाक्त, गाणपत्य, राम उपासक व कृष्ण उपासक भी शिव को मानते हैं। सोमनाथ में महमूद गजनवी की लूट से पहले हीरे का शिवलिंग था जो चमकता रहता था और परमात्मा के ज्योतिस्वरूप को सिद्ध करता था। शिवलिंग पर त्रिपुण्डी भी बनाई जाती है जो भगवान शिव के त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ होने का प्रतीक है। एक मान्यता के अनुसार वृन्दावन में गोपेश्वर के स्थान पर श्री कृष्ण को तथा रामेश्वर में श्री राम को शिव की पूजा करते दिखाते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि श्री कृष्ण, श्री राम तथा अन्य देवताओं के भी भगवान, शिव ही हैं।

मक्का में खाना-ए-काबा में शिवलिंग के समान संग-ए-असवद की प्रतिमा को मुसलमान पवित्र (मुकद्दस) मानते हैं। जापानी लोग भी इसी प्रकार की प्रतिमा से ध्यान लगाते हैं जिसे वे अपनी भाषा में चिन्कानसेकी (शान्तिदाता) कहते हैं। योग का प्राचीन नाम ध्यान ही था जो चीन में भी भारत से गया है। वहाँ इसे चांग कहते हैं जो उच्चारण भिन्नता के कारण परिवर्तित हुआ है। क्राइस्ट, गुरुनानक आदि ने भी परमात्मा को निराकार तथा ज्योतिस्वरूप कहा है।

भगवान द्वापर में नहीं आते – गीता के अध्याय चार के श्लोक न. 7 व 8 के अनुसार धर्म की अत्यंत ग्लानि के समय प्रत्येक युग में साधु-संतों को बचाने हेतु व धर्म-स्थापना हेतु भगवान अवतरित होते हैं। इन श्लोकों से एक बात तो यह सिद्ध होती है कि परमात्मा बेहद धर्मग्लानि के समय आते हैं। किन्तु यदि परमात्मा द्वापर युग में आये तो उसके बाद तो और भी खराब समय कलियुग के रूप में आ गया जबकि सतयुग आना चाहिये था। दूसरी बात यह सिद्ध होती है कि भगवान इस जगत के कण-कण में विद्यमान नहीं हैं, यदि ऐसा है तो परमात्मा को अवतार लेने की क्या आवश्यकता थी। तीसरी बात युगे-युगे शब्दों का प्रयोग बताता है कि परमात्मा प्रत्येक युग में एक बार अवश्य आए हैं तथैव चार अवतार होने चाहियें थे न कि चौबीस अवतार जैसी कि मान्यता है। यदि भगवान हर युग में अवतार लेते तो सृष्टि की दशा हर युग में पहले युग से गिरती न जाती।

कुरुक्षेत्र – युद्धक्षेत्र या धर्मक्षेत्र– महाभारत के युद्ध के अनुसार अकेले भीष्म पितामह ने अपने सेनापतित्व के 10 दिनों में ही पाण्डव-दल के एक अरब लोगों का हनन कर डाला

था – 'जघान यधि योद्धानाम् अबुर्दम (अरब) दशभि दिनैः।' शेष योद्धाओं ने भी तो एक-दूसरे के योद्धाओं को मारा था। इस तरह से महाभारत-काल की जनसंख्या क्या होगी ? आज समस्त हरियाणा की आबादी एक करोड़ से कुछ ऊपर है और सारे भारत की जनसंख्या भी एक अरब से कुछ ऊपर है। कुरुक्षेत्र तो हरियाणा का सबसे कम जनसंख्या वाला जिला है। क्या युद्ध के समय वहाँ पर करोड़ों लोग समा गये होंगे ? ये कुछ मूलभूत तथ्य किसी अन्य समय व स्थान की ओर संकेत करते हैं। गुरु नानक जी की वाणी के अनुसार –

शरीर को मानो खेत,
शुभ कर्मों के बोओ बीज,
ईश्वर नाम से करो सिंचाई,
हृदय को बनाओ किसान,
तब तेरे हृदय में ईश्वर
अंकुरित होगा, और फिर तुझे
निर्वाण पद की फसल मिलेगी।

कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र भी कहा गया है। इस विषय पर वामन-पुराण में बड़ी विचित्र-सी कथा लिखी है। उसमें कहा गया है कि राजा कुरु यहाँ पर धर्म की कृषि करने के लिए आये थे। उन्होंने भगवान शिव से बैल और यमराज से उसका वाहन महिष (भैंसा) लेकर खेती के लिए भूमि को जोतना शुरू कर दिया। तब वहाँ इन्द्र देव जी आये और पूछा कि राजन! आप यहाँ क्या कर रहे हो ? राजा कुरु ने उत्तर दिया कि मैं यहाँ योग, ब्रह्मचर्य एवं सत्य इत्यादि की खेती करना चाहता हूँ। इन्द्र देवता के जाने के बाद विष्णु जी ने कुरु से यही प्रश्न किया और उसके हाथ-पैर के हजारों टुकड़े करके इस क्षेत्र में बो दिए और राजा को यह वर दे दिया गया था कि यह क्षेत्र "कुरु" के नाम से प्रसिद्ध होगा और धर्मक्षेत्र कहलाएगा। उपरोक्त दोनों उदाहरणों का एक प्रतीकात्मक अर्थ निकलता है। यदि गुरुनानक जी तथा विष्णु जी का भावार्थ इस श्लोक से लिया जाता है तो गीता का प्रथम श्लोक समस्त कर्मयोग व धर्मयोग का आधार बन जाता है –

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत
संजय।। (1.1)

(हे संजय, धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्रित, युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया ?) धर्म के विषय में कहा भी गया है कि य धारयति स धर्मः।

गीता-ज्ञान लुप्त-प्राय : अलौकिक-ज्ञान – गीता-ज्ञान अलौकिक है। तथैव गीता-ज्ञान-दाता भी अलौकिक होना चाहिए तथा इस ज्ञान का श्रवण, मनन-चिन्तन व धारण करने वाला भी दिव्यता को प्राप्त करने वाला होना चाहिए। यदि श्रीकृष्ण को गीता ज्ञान-दाता मान भी लिया जाए तो प्रश्न आता है कि क्या गीता-ज्ञान युद्ध स्थल में दिया ? क्या युद्ध के कोलाहल में, जहाँ करोड़ों योद्धा थे, गीता अर्जुन को सुनाई दी होगी ? क्या करोड़ों योद्धाओं के मध्य में अर्जुन अपने मित्र-संबन्धियों को देख सका होगा ? क्या अठारह अध्याय जितनी लम्बी गीता का ज्ञान सुनने के लिए कौरवों ने अर्जुन को युद्ध में समय दिया होगा ? वह भी उन कौरवों ने जिन्होंने छल-कपट से उसके पुत्र अभिमन्यु का वध कर दिया था! धर्म की अत्यन्त ग्लानि के समय क्या गीता केवल अर्जुन, धृतराष्ट्र और संजय को ही सुनाई गयी ? क्या गीता का पाठ मनुष्य को हिंसक बना देता है और क्या यह ज्ञान प्राप्त करके अर्जुन हिंसक हो गया होगा ? गीता सुनने से तो शान्त रस व आनन्द रस पैदा होता है न कि वीर रस। अतः निष्कर्ष तो यही निकाला जा सकता है कि यह ज्ञान, शान्ति व सुख के सागर, ज्ञान के सागर, श्रीमत दाता, काल के पंजे से छुड़ाने वाले, दिव्य-दृष्टि विधाता, सद्गति-दाता, अकालमूर्त सत्-चित्-आनन्द ने दिया है न कि श्री कृष्ण ने।

हमारे शास्त्रों के अनुसार तो स्थापना व विनाश के कार्य क्रमशः ब्रह्मा व शंकर देवताओं के हैं तो फिर गीता के अध्याय 4 के श्लोक 7, 8 व 9 को बोलने वाला कौन हो सकता

है जिसमे लिखा है– **मैं अधर्म का विनाश और धर्म की स्थापना करता हूँ। मैं प्रकाश-स्वरूप हूँ और मेरा जन्म-कर्म अलौकिक है।** श्री कृष्ण को तो विष्णु का अवतार माना जाता रहा है। फिर स्थापना व विनाश भी करने वाला श्री कृष्ण नहीं हो सकता। उपरोक्त श्लोक का कार्य तो तीनों देवों का देव ही कर सकता है। श्रीकृष्ण तो देव है और देवों के लिए तो अहिंसा परमोधर्म होता है। कोई भी देव अहिंसा, धैर्य व सहनशीलता का पाठ पढ़ाता है तो क्या श्री कृष्ण ने अर्जुन को हिंसा का पाठ पढ़ाया होगा ? यदि भगवान को सारथी बनाया तो रथ व रथवान का गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ है। हमारी यह धारणा है कि मन रूपी घोड़े की लगाम अर्जुन ने भगवान के हवाले कर स्वयं को निश्चय-बुद्धि बनाया। गीता का भगवान नित्य है, शाश्वत है, अनश्वर है, दिव्य प्रकाश स्वरूप है, अजन्मा व अजर-अमर है, वह एक साधारण मानव-तन का आश्रय लेकर गीता-ज्ञान देता है जिसे विरले भक्त ही पहचान सकते हैं।

गीता का बढ़ता स्वरूप – गीता के प्रसिद्ध समालोचक मधुसूदन सरस्वती व चिन्तामणि वैद्य इत्यादि लेखकों का मानना है कि गीता एक स्वतन्त्र रचना है जिसका महाभारत के लेखक ने बड़े चातुर्य से महाभारत में विलय कर दिया है। संस्कृत साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते हमने पढ़ा है कि महाभारत का प्रथम नाम "जय" था जो व्यास जी की रचना थी। उस समय इसमें ८८०० श्लोक थे। तत्पश्चात् वैशम्पायन ने इसको "भारत-संहिता" नाम देकर तथा उसके रूप को बढ़ाकर इसके श्लोकों की संख्या 24000 कर दी। तत्पश्चात् सौति उग्रश्रवा ने इसका विस्तार कर 97000 श्लोकों का विशाल ग्रन्थ बना दिया जिसका नाम "महाभारत" रखा गया। प्रक्षेप की वजह से आज तो महाभारत में एक लाख से भी अधिक श्लोक पाये जाते हैं। उपरोक्त तथ्यों से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि महाभारत ग्रन्थ कम से कम चार भिन्न लेखकों की रचना है और यह तथ्य समान रूपेण पूर्व व पश्चिम के आलोचकों ने स्वीकार किया है। गीता को ही शिरोमणि शास्त्र माना जाता है, महाभारत को नहीं। यदि गीता में श्री कृष्ण उवाच की बजाय श्री भगवान उवाच अथवा शिव भगवान उवाच ही होता तो गीता अन्तर्राष्ट्रीय धर्म-शास्त्र होता।

निष्कर्ष – निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गीता, श्रीमद्भगवद्-गीता है न कि श्रीकृष्ण-गीता। गीता-ज्ञान विकारों के साथ युद्ध करना सिखाता है। कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में कोई स्त्री तो नहीं थी फिर भी काम और क्रोध इत्यादि के निवारण का उपदेश क्यों दिया गया है ? वस्तुतः यह ज्ञान नर-नारी को विकारों के साथ युद्ध करने की कला की शिक्षा देता है। गीता एक योग-शास्त्र है तथा गीता का भगवान मनुष्यों को अध्यात्मिक ज्ञान से लाभान्वित कर आत्मा को उसके चौरासी जन्मों का स्वदर्शन कराता है। परमात्मा का सम्यक् रूप तो प्रकाशस्वरूप है जिसका दर्शन, मनन व कथन अनेक सन्तों ने अपनी वाणी में किया है। गीता में वर्णित इसके नायक का दिव्य जन्म, ग्रन्थ का सन्देश,युद्ध स्थल का विशाल-क्षेत्र, गीता के भगवान का सर्वोच्चधाम, उनके कर्मातीत व अभोक्ता होने के गुण श्रीकृष्ण को नायक मानने में सन्देह जताते हैं। दूसरी ओर अठारहवीं सदी के थियोसोफिकल-सोसाइटी के प्रख्यात प्रवक्ता, अर्जुन के पर्यायवाची नाम "नर" की चर्चा भी करते हैं जो किसी व्यक्ति अर्जुन की ओर नहीं बल्कि मनुष्य जाति की ओर संकेत करता है। अतः योग में **स्थित अर्जुन (जो गुणों का अर्जन करता है) अपने मन रूपी घोड़े की लगाम को आदित्य-वर्ण रूपी भगवान सारथी के कर में** पकड़ा कर, स्थित-प्रज्ञ बन विषय-विकारों की वैतरणी को पार कर नर से नारायण का पद प्राप्त करता है।

▲▲

(समाप्त)

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं विश्व एकता

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

शिव पिता परमात्मा ने बताया है कि सतयुग में समस्त विश्व में एक ही राज्य, एक ही भाषा, एक ही मत थी। वहाँ का राज्य कारोबार 2500 वर्षों तक अटल-अखण्ड, निर्विघ्न चलता है। उसे स्वर्ग भी कहा जाता है, जो फिर भी होगा। एकता लाने का प्रयोग समय-प्रति-समय विश्व में होता रहा है जिससे आंशिक सफलता भी अल्पकाल के लिए मिली है परन्तु परमात्मा ने बताया है कि बाहुबल से या मनुष्य मत से कभी भी विश्व में एकता होना सम्भव नहीं है, यह कार्य परमात्मा का ही है। इसके लिए विश्व में जो भी प्रयोग हुए हैं, वे असफल रहे हैं। इस सम्बन्ध में जो -जो प्रयोग हुए हैं, उनके विषय में इस लेख में और बाद के लेखों में विचार करेंगे, जिससे शिव पिता परमात्मा द्वारा किये गये प्रयत्न और उसकी प्राप्ति में और विश्व की अन्य आत्माओं के द्वारा किये गये प्रयत्नों में क्या अन्तर है, वह पता चलेगा और परमात्मा द्वारा किये जाने वाले कार्य की महत्ता स्पष्ट होगी।

विचारधारा द्वारा विश्व में एकता लाने का प्रयोग रशिया में हुआ। वहाँ पर पहले राजशाही थी और राजा ज़ार कहलाता था। वहाँ विद्रोह हुआ और कार्लमार्क्स की साम्यवादी विचारधारा के आधार पर एक राज्य व्यवस्था स्थापित करने का तथा समाज में समानता लाने का पुरुषार्थ किया गया। साम्यवादी विचारधारा को मानने वाले रशिया के पड़ोसी राज्यों ने मिलकर एक संगठन बनाया, उसका नाम रखा गया – यूनाइटेड सोशलिस्टिक सोवियत रिपब्लिक ऑफ रशिया। इस संगठन में रशिया, बेल्युरशिया, यूक्रेन, ताशकन्द, कजाकिस्तान आदि देशों ने भाग लिया और उनकी राजधानी मास्को बनी।

इस विचारधारा के अनुसार संगठित राज्यों द्वारा एक ही प्रकार की जीवन पद्धति अपनाई गई जिससे समाज में समानता रहे। सभी नागरिकों की एक समान आवास-निवास की व्यवस्था द्वारा ऊँच-नीच का भेदभाव समाप्त करने का प्रयत्न किया गया। समाज की सभी अचल सम्पत्ति पर सरकार का अधिकार होता था और मकानों की मरम्मत, संरक्षण आदि का कारोबार सरकार के द्वारा ही होता था।

उद्योगों का भी राष्ट्रीयकरण किया गया और सरकार जो योजना बनाती थी, उसी प्रकार से विकास के कार्यक्रम चलते थे। किसी का सिद्धांत रूप में व्यक्तिगत धन नहीं रहा, सबके धन का मालिक सरकार बन गई। सरकार सबको उनकी व्यक्तिगत आवश्यकता अनुसार खर्च के लिए धन-साधन आदि देती थी। किसी भी व्यक्ति को व्यक्तिगत धंधा या व्यवसाय आदि करने की छुट्टी नहीं थी। सभी सरकार के नौकर बन गये, लोगों ने धनोपार्जन के लिए कोई भी पुरुषार्थ करना बंद कर दिया, जिससे लोगों की कार्यक्षमता का ह्रास हुआ और समाज का विकास ठप्प-सा हो गया। यह स्थिति देखकर सरकार ने आंशिक रूप से छूट दी और लोगों को छोटे-छोटे लघु उद्योग, दुकानें आदि खोलने की स्वीकृति दी, जिससे विकास में कुछ परिवर्तन हुआ। इस प्रयोग से सिद्ध हुआ कि उद्योग-धंधा, नौकरी आदि का राष्ट्रीयकरण करने से समाज में एकता स्थापित नहीं हो सकती। धन की समानता द्वारा विश्व में एकता और समानता स्थापित नहीं हो सकती।

बाद में दूसरा विश्व युद्ध हुआ, जिसमें जर्मन सेना के साथ संयुक्त सोवियत संघ का घमासान युद्ध हुआ। जर्मन सेना ने पोलेण्ड, बेल्युरशिया, यूक्रेन आदि राज्यों पर अधिकार कर

लिया। रशिया पर भी आक्रमण करके सेन्ट पीटर्सबर्ग तक तो जर्मन सेना पहुँच गई किन्तु वहाँ की ठण्ड के कारण उसको पीछे हटना पड़ा और रशिया की सेना के प्रत्याघाती आक्रमण के कारण सोवियत संघ के बल पर पोलेण्ड आदि देश जर्मन सेना के आधिपत्य से मुक्त हो गये। इस युद्ध में जर्मन और सोवियत संघ के कुल मिला कर चार करोड़ के लगभग लोग मारे गये और अरबों-खरबों की सम्पत्ति नष्ट हो गई। मरने वालों में पुरुषों की संख्या अधिक होने के कारण समाज में स्त्री-पुरुषों का संतुलन बिगड़ गया अर्थात् स्त्रियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक हो गई। परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक समस्यायें उत्पन्न होने लगीं। लग्न प्रथा भी अनेक स्थानों पर नष्ट प्राय: हो गईं और माँ-बाप से रहित अनाथ लाखों बच्चे रास्तों पर भटकने लगे। यह समस्या आज भी अर्थात् द्वितीय विश्व-युद्ध के 60 साल बाद भी पूर्व सोवियत संघ के सदस्य देशों में विद्यमान है। आज भी 20 लाख अनाथ बच्चों की पालना की समस्या केवल रशिया देश के सामने है। अन्य स्थानों पर भी ऐसी ही समस्यायें हैं।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद रशिया के उन देशों में जो एकता आई थी, वह एकता द्वितीय विश्व युद्ध में अखण्ड रही और उसके कारण उन सबने मिलकर जर्मन सेना का सामना किया और उसमें आंशिक सफलता प्राप्त की। भारत में भी अनेक विदेशी सत्ताओं के आक्रमण पिछले 4-5 सौ सालों में हुए किन्तु विभिन्न राज्यों में एकता न होने के कारण भारत के राजागण विदेशी आक्रमणों का सामना नहीं कर सके। फलस्वरूप भारत को कई सदियों तक राजनैतिक दासता को सहन करना पड़ा और सोमनाथ जैसे अनेक मन्दिरों को अनेक बार लूटा गया। जबकि एकता के कारण सोवियत संघ की स्वतंत्रता कायम रही। यह एकता अर्थात् संगठन के बल की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

समानता लाने के लक्ष्य से साम्यवादियों ने धर्म को समाज से दूर कर दिया। लोगों को गिरजाघरों में जाने की मना की गई और साम्यवादी विचारधारा ही उनका धर्म है, ऐसी नीति अपनाई गई। इसके कारण लोग धर्म से विमुख हो गये और उनका चारित्रकि पतन हुआ। आध्यात्मिकता के आधार पर जो जन-जागृति लोगों में आती है, उसको दबाने के लिए सैन्य शक्ति का प्रयोग किया जाता है।

विश्व में एक महाशक्ति का स्थान प्राप्त करने के लिए वहाँ पर लेनिन के बाद स्टालिन, खुश्चेव आदि जो भी धुरंधर, राज्य कारोबार में आये, उन सबने रशिया की सैन्य शक्ति तथा युद्ध सामग्री के विकास पर ही ध्यान दिया। एटम बम्ब, हाइड्रोजन बम्ब आदि बनाये, राकेट आदि का विकास किया, आकाश में उपग्रह आदि जाने लगे अर्थात् सारा ध्यान सैन्य शक्ति के विकास पर ही केन्द्रित रहा। परिणामस्वरूप औद्योगिक विकास कम हो गया और विदेशों से आयात पर प्रतिबंध होने के कारण जीवनयापन के लिए उपभोक्ता सामग्री प्राप्त करने के लिए उपभोक्ताओं की बड़ी-बड़ी लाइनें लगने लगीं। जिससे सरकार और प्रजा में परस्पर प्रेम के बदले सत्ता और सामर्थ्य का नग्न प्रदर्शन पुलिस, सेना आदि के द्वारा होने लगा। सरकार की विचारधारा का विरोध करने वाले कइयों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और कइयों को जेलों में भी जाना पड़ा। परन्तु जैसे कुत्ते की पूँछ को बाँधकर सीधा रखने से वह सीधी नहीं होती, रस्सी को खोलने पर वह टेढ़ी-की-टेढ़ी ही रहती है, इसी प्रकार सैन्य शक्ति या तानाशाही के आधार पर लाई हुई एकता अधिक समय नहीं चली। उसे खत्म करना पड़ा और फिर से आंशिक रूप में प्रजातंत्र का स्वरूप लाना पड़ा। वहाँ पर प्रजातंत्र भी भ्रामक ही रहा है क्योंकि अभी-अभी वहाँ राष्ट्रपति के चुनाव में, वर्तमान राष्ट्रपति पुतीन के सामने वाडीवोस्तकोवा खड़े हुए। बाद में

सरकार ने उनके ऊपर इंकमटैक्स आदि के नाम पर अनेक केस कोर्ट में दाखिल कर दिये और केस की सुनवाई के समय अखबार आदि के किसी व्यक्ति को हाजिर नहीं रहने दिया गया। उस व्यक्ति को 32 साल की जेल कर दी गई है। वर्तमान में वहाँ के प्रजातंत्र का ऐसा स्वरूप है। अमेरिका ने भी इसका विरोध किया परन्तु रशिया की सेना सत्ता ने यह विरोध स्वीकार नहीं किया।

सैन्य शक्ति के द्वारा बनाई गई साम्यवादी विचारधारा के आधार पर अगर सच्ची एकता स्थापित होती तो साम्यवादी विचारधारा वाले देश रशिया और चीन दोनों मिलकर एक महाशक्ति के रूप में कारोबार करते किन्तु रशिया और चीन में कभी भी वैचारिक एकता नहीं हुई। पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच की बर्लिन की दीवार तो फिर भी टूटी और दोनों जर्मनी एक हो गये किन्तु रशिया और चीन के बीच की चीन की दीवार अभी तक खत्म नहीं हुई जोकि दोनों के बीच वैचारिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक और सामाजिक भेद के रूप में खड़ी है। जो भी देश रशिया के संगठन में सम्मिलित थे वे फिर अलग हो गये अर्थात् जो एकता, पहले विश्व युद्ध के बाद क्रान्ति के द्वारा राजशाही को खत्म करके स्थापित हुई वह 1990 के आसपास खत्म हो गई और कई राज्य सोवियत संघ से अलग हो गये। सोवियत संघ जो एक महाशक्ति के रूप में था, वह नष्ट हो गया क्योंकि सत्ता और उद्योग रशिया में थे और सैन्य साधन और अणु शक्ति यूक्रेन जैसे देशों में चले गये। इस प्रकार सोवियत संघ के विभाजन से शक्तियों आदि का भी विभाजन हो गया और बचे हुए रशिया की सरकार को विदेश से धन और विदेशी चीज़ों के आयात करने की मजबूरी का सामना करना पड़ा। वर्तमान राज्य सत्ता की एक कटु सत्यता यह भी है कि कोई भी देश किसी को दीर्घकाल के लिए मित्र या शत्रु मानकर नहीं चल सकता। उदाहरणार्थ दूसरे विश्व युद्ध में जर्मनी और रशिया एक-दूसरे के शत्रु थे। आज वे दोनों ही भिन्न विचारधारा के होते हुए भी मित्र बने हुए हैं। वर्तमान समय रशिया में अधिक-से-अधिक विदेशी धन का विनियोग जर्मनी की सरकार और वहां के लोगों ने किया है। अगले लेख में जर्मनी और यूरोप के अन्य देशों के बीच सम्पूर्ण या आंशिक एकता लाने का जो प्रयोग हो रहा है, उसकी चर्चा करेंगे। जब इन सब बातों का ज्ञान होगा तब ही परमपिता परमात्मा के द्वारा किये विश्व एकता के प्रयोग के महत्त्व को हम समझेंगे और तब ही वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग और अपने वर्तमान ब्राह्मण जीवन के महत्त्व को समझ सकेंगे और उसका सुख अनुभव कर सकेंगे।

पाली– राजस्थान पत्रिका के संपादक भ्राता सुकुमार वर्मा, सांसद भ्राता पुष्प जैन तथा ज़िला कलेक्टर भ्राता कुलदीप रांका, ब्रह्माकुमार अवतार भाई को उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए सम्मानित करते हुए।
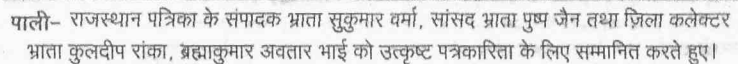
1. फिल्लौर- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. प्रभा मिश्रा बहन, एस.डी.एम. भ्राता एस.एम.शर्मा, ब्र.कु. भारतभूषण भाई, ब्र.कु. सतीश भाई, ब्र.कु. रमेश भाई तथा ब्र.कु. राकेश भाई सम्बोधित करते हुए । **2.फर्रुखाबाद (नेहरु रोड)-** सार्वजनिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. भ्राता पी.एस. सूद । साथ में ब्र.कु. विद्या बहन, ब्र.कु. शीलू बहन तथा बहन पुष्पा सूद । **3. मुजफ्फर नगर (अंसारी रोड)-** जनपद न्यायाधीश भ्राता सय्यद नाजिम हुसैन जैदी व ज़िलाबार संघ अध्यक्ष भ्राता राजेश्वर दत्त त्यागी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पुष्पा बहन । **4. कानपुर-** पुलिस महानिरीक्षक भ्राता रिजवान अहमद को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शीलू बहन । **5. कुण्ड (रेवाड़ी)-** प्राचार्य भ्राता पृथ्वी सिंह जी, नैतिक शिक्षा का महत्त्व विषय पर भाषण करने के निमित्त ब्र.कु. गीता बहन को सम्मानित करते हुए । **6. मोगा-** बाबा गुरजंट सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. संजीवन बहन । **7. चरखी दादरी-** ज़िला रैडक्रास सोसायटी के सचिव भ्राता श्याम सुन्दर को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. वसुधा बहन । **8. गुराया-** महंत भ्राता गंगादास जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन । **9. असंध-** हरियाणा कुश्ती के कोच भ्राता सुरेश कुमार को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शारदा बहन । **10. लखीमपुर (गोला गोकरणनाथ)-** उत्तर प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री भ्राता शिवपाल सिंह यादव, चैती मेला समापन समारोह में ब्र.कु. मंजू बहन तथा ब्र.कु. अलका बहन को मोमेन्टो तथा प्रशस्ति-पत्र भेंट करते हुए । **11. लखीमपुर खीरी-** पूर्व सहकारिता मंत्री भ्राता रामकुमार वर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. नीलम बहन ।

1. देहली (मजलिस पार्क)- महाभारत धारावाहिक में भीम की भूमिका निभाने वाले अभिनेता भ्राता प्रवीण को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. राजकुमारी बहन । **2. देहली (लोधी रोड)-** 'योग भगाए रोग' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गिरिजा बहन, ब्र.कु. सुन्दरी बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, विधायक भ्राता अशोक आहूजा तथा ब्र.कु. सुमित्रा बहन । **3. देहली (शालीमार बाग)-** 'आध्यात्मिक संस्कृति द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना' कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. पूनम बहन, भ्राता भूषण जैन, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा सुरेश भाई । **4. आगरा (सेक्टर-7)-** पूर्व स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रामबाबू हरित को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सरिता बहन । **5. बरबर खीरी-** आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्ष भ्राता संजय शर्मा तथा ब्र.कु. नीलम बहन । **6. बिलग्राम (कन्नौज)-** आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करती हुईं ब्र.कु. पूनम बहन । मंच पर विराजमान हैं उपज़िलाधिकारी भ्राता राजाराम, तहसीलदार भ्राता स्वामीनाथ श्रीवास्तव तथा खण्ड विकास अधिकारी भ्राता यतेन्द्र मिश्रा जी । **7. धर्मशाला-** ढ़गवार गाँव में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी देखने के बाद दूध डेयरी प्रबन्धक भ्राता अमृत महिन्द्र जी, ब्र.कु. उमा बहन तथा अन्य । **8. लौहियाँ खास-** आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं पंजाब के पूर्व गृहमंत्री भ्राता बृजभूपिन्दर सिंह, ब्र.कु. सतीश भाई, ब्र.कु. भारतभूषण भाई, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा अन्य ।

1. **सोनीपत (सेक्टर-15)**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. भ्राता बृजमोहन, ब्र.कु. आशा बहन, विधायक भ्राता अनिल ठक्कर तथा अन्य । 2. **अमृतसर**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. अचल, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. आदर्श बहन तथा गणमान्यजन । 3. **पानीपत (हुड्डा)**- आध्यात्मिक संस्कृति द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं उद्योगपति भ्राता सियाराम गुप्ता, बहन राजबाला गुप्ता, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा ब्र.कु. भारतभूषण भाई । 4. **पठानकोट**- विज्ञान व आध्यात्मिकता चित्र-प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए प्राचार्य प्रोफेसर भ्राता शमरिन्द शर्मा, ब्र.कु. प्रताप भाई, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य । 5. **पालमपुर**- आध्यात्मिकता द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री भ्राता शान्ता कुमार, बहन वीणा बुटेल, ब्र.कु. अचल बहन तथा ब्र.कु. प्रेम बहन। 6. **जालंधर**- उद्योगपति भ्राता शीतल विज प्रधान, आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए । साथ में हैं ब्र.कु. रानी बहन तथा ब्र.कु. विजय बहन । 7. **लखनऊ (रामनगर)**- बाल ब्रह्मचारी स्वामी महामण्डलेश्वर जी तथा उनके शिष्यों के साथ ज्ञान चर्चा के बाद ब्र.कु. सती दादी जी तथा अन्य । 8. **देहली (पंजाबी बाग)**- 'मेरी दिल्ली' अखबार के संरक्षक भ्राता केसर सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. रुक्मिणी दादी जी।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510,
आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : bkatamad1@sancharnet.in (Ph. No. (02974)- 228125, 228124 shantivan@vsnl.com

1. गुजरात (छोटा उदयपुर)- रेल राज्यमंत्री भ्राता नारायण राठवा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. मोनिका बहन तथा ब्र.कु. आशा बहन । **2. हैदराबाद (शान्ति सरोवर)**- आन्ध्रप्रदेश के वित्त मंत्री भ्राता के. रोशय्या को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सावित्री बहन तथा ब्र.कु. कुलदीप बहन । **3. भद्राचलम**- आन्ध्रप्रदेश के वित्त तथा विधानसभा मामलो के मंत्री भ्राता के. रोशय्या को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सुजाता बहन । **4. चण्डीगढ़**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री बहन करतार देवी, ब्र.कु. अचल बहन, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ए.आई.आर. चण्डीगढ़ निदेशक भ्राता के.सी. दुबे तथा अन्य। **5. मुम्बई (दादर)**- अलविदा तनाव कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री भ्राता विजय पाटिल, ब्र.कु. भ्राता रमेश शाह, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा सांसद भ्राता एकनाथ गायकवाड़ जी । **6. सोनपुर**- उड़ीसा के इस्पात एवं पूर्ति मंत्री भ्राता अनंग उदय सिंह देव जी के चित्र प्रदर्शनी उद्घाटन अर्थ पधारने पर स्वागत करती हुई ब्र.कु. मामिना बहन । **7. शहडोल**- मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता बाबूलाल गौर को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. नलिनी बहन। **8. सम्बलपुर**- उड़ीसा के यातायात मंत्री भ्राता जयनारायण मिश्र को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. पार्वती बहन । **9. डिब्रूगढ़**- कला में दिव्यता विषय पर सम्बोधित करती हुईं ब्र.कु. उर्मिला बहन । साथ में है विधायक भ्राता कल्याण कुमार गोगोई तथा ब्र.कु. सत्यवती बहन।

Regd.No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.
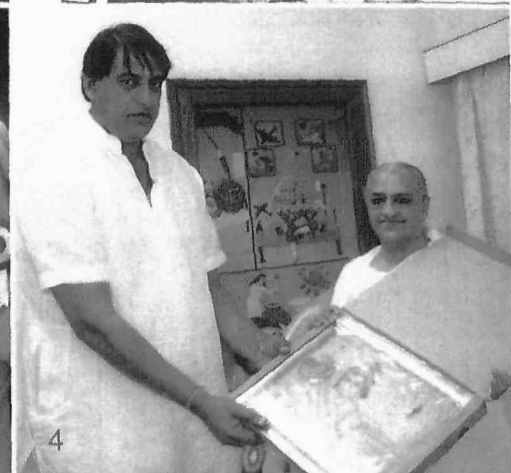
1. अहमदाबाद- 'आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दर्पण एकेडमी की निदेशक पद्मविभूषण बहन मृणालिनी साराभाई, ब्र.कु. सरला बहन, न्यायाधीश भ्राता के.जी. शाह, न्यायाधीश भ्राता डी.के. त्रिवेदी, आयकर आयुक्त डॉ. भ्राता प्रयाग झा, आयकर आयुक्त बहन विनीता चोपड़ा, ब्र.कु. शारदा बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा ब्र.कु. क्रीना बहन । **2. किशनगढ़ रेनवाल (जयपुर राजापार्क)**- भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति भ्राता भैरोंसिंह शेखावत जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. सुमित्रा बहन । साथ में हैं विधायक भ्राता नवरत्न राजोरिया जी तथा ब्र.कु. सीताराम भाई। **3. इन्दौर (ओमशान्ति भवन)**- चिंतामुक्त कार्यशैली विषय पर आयोजित महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कुलपति भ्राता सी.एस. चड्ढा जी, भ्राता पी.एल. नेने जी, भ्राता अशोक मेहता जी, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई तथा ब्र.कु. आशा बहन । **4. देहली (पाण्डव भवन)**- अर्जुन अवार्ड से सम्मानित तथा महाभारत में भीम की भूमिका निभाने वाले भ्राता प्रवीण कुमार को ईश्वरीय सौगात देती हुईं राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी । **5. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)**- प्रशासन में उत्कृष्टता विषय पर आयोजित महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए नाबार्ड की अध्यक्षा बहन रंजना कुमार, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. महेन्द्र भाई, बैंगलोर दूरदर्शन के निदेशक भ्राता महेश जोशी, ब्र.कु. शीलू बहन तथा ब्र.कु. हरीश भाई । **6. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)**- सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए नवीन संकल्पना विषय पर आयोजित सेमिनार का उद्घाटन करती हुईं राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, गुजरात के विधि मंत्री भ्राता अशोक भट्ट जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. रमेश शाह जी, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. महेन्द्र भाई तथा ब्र.कु. प्रेम भाई ।